भाषा शिक्षण

रघुवंश मिश्रा

<u>भाषा शिक्षण के प्राकृतिक सिध्दान्त</u>

हम कुछ भी सीखना चाहें उसके लिए भाषा की आवश्यकता होती है। इस अर्थ मे कि हमारी कल्पना, विचार, तर्क व तुलना का आधार भाषा ही है। अतः प्राथमिक स्तर से ही भाषा शिक्षण पर विशेष ध्यान देने के साथ-साथ यह प्रयास होना चाहिए कि भाषा शिक्षण, सीखने के प्राकृतिक सिध्दान्तों की चरणबध्द प्रक्रिया पर आधारित हो।

प्रत्येक बच्चा बिना विशेष प्रयास किये भाषा को अपने वातावरण से सीखता है। बच्चा जिस भौगोलिक क्षेत्र से सम्बधित होता है, उस क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा वह स्व-स्फूर्त रूप से सीखता है। उदाहरण के लिए भारत के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्र में रहने वाला बच्चा उस क्षेत्र विशेष में बोली जा रही भाषा को सीखता है। यही सिध्दान्त विश्व के अन्य भौगोलिक क्षेत्र में निवासरत बच्चों के भाषा सीखने पर भी लागू होता है।

<u>प्राकृतिक सिध्दान्त की प्रक्रिया</u>: - आज हम जिस परिस्थिति एवं परिवेश में रहते है, उसमें भाषा का एक विकसित स्वरूप हमारे सामने है। इसी कारण आज के समय में भाषा सीखने और सिखाने के लिए शिक्षण के जिन तरीकों का उपयोग किया जाता है, उसमें प्राकृतिक सिध्दान्त के कुछ चरणो की अवहेलना है, जिसके कारण बच्चे ठीक से भाषा नही सीख पाते। वर्तमान में भाषा शिक्षण वर्ण से आरंभ कर वाक्य तक दिया जाता है। यह भी चार भाषायी कौशल - सुनना, बोलना, पढ़ना व लिखना पर आधारित है। इसके अंतर्गत बच्चा उन्ही शब्दों को सुनता, बोलता, पढ़ता और लिखता है, जो उन्हे सुनने, बोलने, पढ़ने व लिखने के लिए दिया जाता है। यदि हम चाहते है कि हमारे सभी बच्चे भाषा को बहुत ही सहजता के साथ से सीखे तो हमे भाषा शिक्षण के प्राकृतिक सिध्दान्तों पर विशेष जोर देना होगा।

<u>प्राकृतिक सिध्दांत के चरण</u>: -

1. **संकेत**: वर्षो पहले जब मानव के पास विचार-अभिव्यक्ति व भावनाओं के संम्प्रेषण के लिए कोई वर्णमाला व उससे बने शब्द नही थे, तो संकेत ही वह माध्यम था, जिससे विचार/भावना की अभिव्यक्ति होती थी। वर्तमान भाषा शिक्षण मे हम वर्ण व उससे बने शब्द सिखाने के लिए सर्वप्रथम संकेतो का ही उपयोग करें। जैसे- कक्षा पहली के बच्चों को पक्षी शब्द सिखाना हो तो उड़ने का संकेत पहले बताएं।
2. **ध्वनि:** भाषा सीखने के व्दतीय चरण में संकेतो को ध्वनि से जोड़ें। जैसें, पक्षी शब्द के लिए संकेत के साथ चीं-चीं व हवा के लिए संकेत के साथ सर-सर की ध्वनि बतलाएं।

3. **वर्णमाला व मात्रा:** ध्वनि युक्त संकेत के लिए उपयोग में लाए गए शब्द को वर्ण के आधार पर स्पष्ट करें। जैसे- पक्षी-प/क्ष/ी, हवा-ह/व/ा, इत्यादि।
4. **शब्द:** शब्द से वर्ण को अलग करने व वर्ण को मिलाकर शब्द बनाने की क्रिया को बार-बार अलग-अलग वर्ण व शब्दो के साथ दोहराते रहें।
5. **वाक्य बनाना:** वर्ण व शब्द निर्माण के अभ्यास से बच्चा वाक्य बनाना सीखना आरम्भ करता हैं। जैसे, हवा से पेड़ हिलते है।
6. **वाक्यो की पहचान:** संकेत व उसमे प्रयुक्त ध्वनि के व्दारा बच्चा अलग-अलग प्रकार के वाक्यों की पहचान करना सीखता है। जैसे, अंदर आओ।, क्या तुम आम खाओगे ?
7. **वर्ण, शब्द, वाक्य व अनुछेद पढ़ना व लिखना:** संकेत व ध्वनि का शब्दो के साथ सम्बध स्थापित करने के समय ही बच्चा शब्दो को बोलना, पढ़ना व लिखना सीखने का प्रयास करता है। अभ्यास से वह दक्ष होता जाता है।
8. **संकेत - ध्वनि - वर्ण - शब्द - वाक्य - अनुछेद**
9. **सुनना व समझना**
10. **बोलना व पढ़ना**
11. **लिखना**

हम यह भी पाते है कि जिस बच्चे को औपचारिक रूप से भाषा नही सिखाई जाती वह सुनने व बोलने मे ही दक्ष होता है, पढ़ने व लिखने में नही, क्योकि ऐसे बच्चे संकेत व उससे सम्बधित ध्वनि सीखने के चरणो से नही गुजर पातें। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि हम औपचारिक भाषा शिक्षण (शाला मे) में जितना ज्यादा संकेत व ध्वनि का उपयोग करेगें, बच्चा भाषा में उतना ही अधिक दक्ष होगा, और इसका सकारात्मक प्रभाव अन्य विषयों के सिखने पर भी पड़ेगा।

ध्वनि से निर्मित (आनोमेटोपोइक) शब्द

भाषा की उत्पत्ति एवं विकास के क्रम में ध्वनि का महत्वपूर्ण स्थान है। हमारे आस-पास ऐसे अनेक शब्द है, जिनकी उत्पत्ति ध्वनि से हुई हैं। ध्वनि से उत्पन्न ऐसे शब्दों को 'आनोमेटोपोइक' (ध्वनि से निर्मित शब्द) कहा जाता है। बच्चों के आरंभिक शब्द भंडार व भाषायी उपयोग की क्षमता वृध्दि में ऐसे शब्दों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शाला पूर्व बच्चों के पास जो भी शब्द भंडार होता है, उसका बहुत बड़ा भाग ध्वनि से निर्मित शब्दों का होता है, जो उनके विचार व भावनाओं का सम्प्रेषण करता है।

प्राथमिक स्तर पर कक्षा पहली व दूसरी पढ़ाने वाले शिक्षक को बच्चों के परिवेश से सम्बधित ऐसे शब्दों का चिन्हाकंन पहले से कर लेना चाहिए। कक्षा में शिक्षण के दौरान शिक्षक ऐसे शब्दों से सम्बधित ध्वनि उत्पन्न कर देखे कि बच्चे को उस ध्वनि से सम्बधित शब्द की जानकारी है अथवा नहीं। यदि जानकारी हो तो उससे सम्बधित अर्थ की पुष्टि करें तथा न हो तो जानकारी दें। इससे बच्चों को भाषा समझने में सहयोग मिलेगा और वे अपने को अभिव्यक्त करने में अधिक सक्षम बनेगें।

ध्वनि निर्मित शब्द:- प्रकृति में असंख्य ध्वनियॉ विद्यमान है और प्रत्येक ध्वनि को अलग-अलग प्रकार से पहचानने की क्षमता मानव मस्तिष्क के पास है। इन ध्वनियों में प्रकृति, पक्षी, कीड़े-मकोड़े, जानवर व मानव वदारा उत्पन्न ध्वनियॉ सम्मिलित है। इनके कुछ उदाहरण नीचे दिये गए हैं -

1. **जानवरों व्दारा उत्पन्न ध्वनि व शब्द**

	नाम	ध्वनि व शब्द
1	शेर	दहाड़ना
2	कुत्ता	भौकना
3	घोड़ा	हिनहिनाना
4	बिल्ली	म्याऊॅ
5	गाय	बॉ...

2. **पक्षियों व्दारा उत्पन्न ध्वनि व शब्द**

	नाम	ध्वनि व शब्द
1	गौरेया	चीं-चीं
2	कबूतर	गुटर-गु
3	कौआ	कांव-कांव
4	मुर्गा	कुकडु-कू...
5	कोयल	कु .....

3. <u>प्रकृति व्दारा उत्पन्न ध्वनि व शब्द:</u>

	नाम	ध्वनि व शब्द
1	हवा का बहना	सर्-सर्
2	बादल गरजना	गड़-गड.
3	पानी गिरना	झर-झर, टप-टप
4	बिजली चमकना	चम-चम
5	पत्ते का गिरना	खड़-खड़

4. **मनुष्य व्दारा उत्पन्न ध्वनि व शब्द:**

	नाम	ध्वनि व शब्द
1	दुख	आ.....
2	दर्द	हाय.....
3	आश्चर्य	ओह..!
4	रोना	ऊं....
5	हॅसना	ह.ह.ह...

इसके अतिरिक्त बच्चों से बर्तनों के आपस में टकराने, दरवाजा व खिड़की के खुलने व बंद होने, किसी वस्तु के टूटने, फटाखा फूटने इत्यादि के समय उत्पन्न ध्वनि व उससे सम्बंधित शब्द के बारे में चर्चा कर बच्चों के शब्द भंडार में वृध्दि कर सकते है। इससे बच्चों को आगे चलकर भाषा के उपयोग में बहुत सहायता मिलेगी।

भाषाई कौशल के विकास में संदर्भ रहित शब्दों की भूमिका

भाषा सीखने के क्रम में चार कौशलों के विकास पर जोर दिया जाता है। (1) सुनना (2) बोलना (3) पढ़ना (4) लिखना। बच्चा जन्म से लेकर शाला में प्रवेश लेने तक बहुत से शब्दों को सुनकर अर्थ जान जाता है। वह यह भी जानने लगता है कि उस सुने हुए शब्द का उपयोग कैसे और कहां किया जाना है। इसका प्रमाण हमें उन सुने हुए शब्दों को बोलकर उपयोग करने में मिलता है। बच्चा आरम्भ में ही अपने आस-पास के लोगो के व्दारा बुलाने के लिए - आओ, जाने के लिए - जाओ, बैठने के लिए - बैठो, सोने के लिए- सो जाओ, इत्यादि शब्दों को सुनता है, और समान परिस्थिति में अपने मित्रों अथवा अन्य लोगों से इन्हीं शब्दों को बोलता है। इस प्रकार सुनने और बोलने के बहुत कुछ भाषायी कौशल बच्चा शाला आने के पूर्व ही प्राप्त कर लेता है।

शाला प्रवेश के साथ बच्चे की औपचारिक शिक्षा का आरम्भ होता है। शिक्षक, पाठ्यक्रम पर आधारित चीजों के सुनने और बोलने पर जोर देता है। इसका परिणाम हमें यह देखने को मिलता है कि शिक्षक ने हमें जो सुनाया वह बच्चे ने इसके पहले कभी सुना नहीं होता है। क्योंकि सुना ही नहीं इसलिये उससे सम्बधित चीजों के बारे में वह कुछ बोल भी नहीं पाता है। इसका प्रभाव उसके पढ़ने व लिखने के कौशल पर पढ़ता है, और बच्चा पिछड़ने लगता है। ज्यादा गंभीरता से विचार करने पर यह स्पष्ट होता है कि कम से कम कक्षा 1 एवं 2 में 'संदर्भ आधारित भाषा शिक्षण' पर जोर न देकर 'संदर्भ रहित भाषा शिक्षण' पर जोर देना चाहिए। इसका तात्पर्य यह है कि आंरभिक कक्षाओं मे उन्हीं शब्दों के वर्ण व मात्रा पर ध्यान केन्द्रित किया जाये, जिसके सम्बंध मे बच्चा पहले से ही सुनता और बोलता आ रहा है।

कक्षा 1 में प्रवेश लेने वाले बच्चे रिश्तेदारी से सम्बधित मॉ-बाप, दादा-दादी, चाचा-चाची जैसे शब्दों को सुनता और बोलते है। उदाहरण के लिए बच्चा जानवर जैसे, गाय, बैल, भैंस, बकरी, कुत्ता, बिल्ली; प्राकृतिक चीजें जैसे, पानी, पेड़, हवा, पत्ती, बादल; बोलचाल के सामान्य शब्द जैसे- आओ, उठो, बैठो, जाओ, हॉ, नहीं इत्यादि के सम्बंध में साधारण रूप से अक्सर सुनता और बोलता है, रहा है; किन्तु मौसा-मौसी, जीजा, गैंड़ा, जिराफ, भेड़िया, समुद्र, नदियॉ व गम्भीर अर्थ वाले शब्दों को कभी-कभी ही सुनता और बोलता है।

उपरोक्त उदाहरणो से स्पष्ट है कि शाला के आरम्भ में बच्चे व्दारा पूर्व में सुने और बोले गये शब्दों के वर्ण व मात्रा को प्राथमिकता के साथ बतलाना चाहिए। हम यह भी पाते है कि हिन्दी की बर्णमाला के प्राय: सभी अक्षरों एवं मात्राओं से बने शब्द बच्चे पहले से ही बोलते हैं। यह अलग बात है कि स्पष्ट रूप से पढ़ व पहचान नहीं पाते। अतः शाला के आरंभिक दिनों मे ज्यादा से ज्यादा संदर्भ

रहित शब्दों को सुनने और बोलने का अवसर दिया जाना बच्चों के भाषायी कौशल के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

प्रत्येक भाषा दो स्तरो पर सीखी जाती हैं - प्राथमिक स्तर एवं व्दितीयक स्तर। प्राथमिक स्तर के अंतर्गत वर्णमाला व व्दितीयक स्तर के अंतर्गत वर्णमाला के संयोजन से बने शब्द की जानकारी सम्मिलित है। जैसे – अ/ब, क/म, न/ल; व अ/ब=अब, क/म=कम, न/ल=नल आदि। बच्चा आंरभिक काल में अपने विचारों/भावनाओं का सम्प्रेषण भाषा उपयोग के प्राथमिक स्तर पर करता है। जैसे-अम्मा के लिए-मॉ, पिताजी के लिए-पा, पानी के लिए-पा, दादा के लिए-दा, चाचा के लिए-चा इत्यादि। जैसे-जैसे बच्चा अपने आस-पास के और अधिक लोगों के सम्पर्क में आता है, वह उनके व्दारा बोले जाने वाले शब्दों को सुनकर, भाषा सीखने के व्दितीयक स्तर अर्थात वर्णमाला के संयोजन से बने शब्दों का उपयोग करना सीखता है। जैसे-अब बच्चा मॉ के स्थान पर अम्मा, पिताजी के लिए-पा/पा=पापा, दादा के लिए-दा/दा=दादा, चाचा के लिए-चा/चा=चाचा इत्यादि।

भाषा सीखना मनुष्य का सहज स्वभाव है। वह अपनी अंर्तदृष्टि से यह भी जान जाता है कि किस वर्ण के संयोजन से बना शब्द सही है अथवा गलत। यही कारण है कि जब हम कोई गलत वर्णो के संयोजन से बने शब्द का उपयोग करते है तो वह शब्द हमे कुछ गलत होने का आभास कराता है, और हम उसे तुरंत सही करने का प्रयास करते है। इसका अभिप्राय यह भी है कि हम अर्थपूर्ण शब्दों का उपयोग करते है और अर्थहीन शब्दों के उपयोग से बचते है। भाषा सीखने के इस प्रक्रिया का पालन व उपयोग हम बचपन से ही करते है।

बच्चों के भाषा सीखने हेतु गतिविधि:

1. वर्णमाला के सभी वर्णो को क्रम से श्यामपट पर लिखे अथवा सभी वर्णमाला का कार्ड रखें।
2. बच्चों के व्दारा बोले गए शब्दों को श्यामपट पर अलग से लिखें। जैसे - कोई बच्चा घर, नल, जग बोलता है, तो उसे श्यामपट पर लिख लें। ऐसे ही सभी बच्चों से बारी-बारी उनके वदारा बोले जाने वाले एक - दो शब्द लें।
3. अब श्यामपट पर अथवा कार्ड पर लिखे वर्णमाला से बच्चों के व्दारा बोले गए शब्द से सम्बंधित वर्णमाला की पहचान कराते हुए वर्णो के संयोजन को समझाए। जैसे-घर शब्द के लिए श्यामपट अथवा कार्ड पर लिखे घ/र वर्ण को चिन्हाकिंत कर सभी शब्दो के लिए इसी प्रकार गतिविधि को आगे बढ़ाये।
4. सभी बच्चों के व्दारा बोले गए शब्दों की गतिविधि वर्णमाला से कराने के बाद यह भी बतलाए कि ये शब्द किस प्रकार अर्थपूर्ण है।

5. कुछ ऐसे वर्णमाला का उपयोग कर शब्द बनाये जो अर्थहीन हो जैसे-अ/ड=अड, न/क=नक इत्यादि।
6. सभी बच्चों से बारी-बारी से वर्णमाला का उपयोग कर दो-दो अर्थपूर्ण व अर्थहीन शब्द बनाने को कहें। बच्चे व्दारा की गई त्रुटि का निराकरण तुरन्त अन्य उदाहरणों से करे।

गतिविधि से लाभ:

1. बच्चे रोचक ढ़ंग से भाषा सीखेगें।
2. बच्चों के शब्द भंडार में वृध्दि होगी।
3. बच्चे शब्दों को अर्थपूर्ण व अर्थहीन की दृष्टि से समझेगें।
4. बच्चा भाषा उपयोग करने में सहज महसूस करेगें।
5. बच्चों मे भाषायी कौशलो का क्रमिक व सुदृढ़ विकास होगा।

शब्द भंडार

बच्चों के शब्द भंडार को समृध्द करने में परिवेश का महत्वपूर्ण योगदान होता है। शाला के बच्चों के अभिव्यक्ति कौशल में जो भिन्नता हमें दिखाई देती है, उसका कारण परिवेश ही हैं। यही कारण है कि जब हम अलग-अलग बच्चों से समान चीजों के बारे में पूछते हैं, तो वह अपने अर्जित शब्द-भंडार के आधार पर कम या ज्यादा शब्दों में जवाब देता है। अतः एक जागरूक शिक्षक को अपने शाला परिक्षेत्र के परिवेश को ध्यान में रख कर भाषा विषय का शिक्षण करना चाहिए।

विगत 30 वर्षो में हमारे आस-पास बोले जाने वाली भाषा के स्वरूप में बदलाव आया है। पहले जहॉ स्थानीय भाषा जैसे-छत्तीसगढ़ के सन्दर्भ में छत्तीसगढ़ी, गोंड़ी, हल्बी, सरगुजिहा व हिन्दी का उपयोग ज्यादा होता था, वहीं आजकल इसके साथ-साथ अंग्रेजी के शब्दों का भी व्यापक उपयोग हो रहा है। कुछ मामलों में तो अंग्रेजी के शब्दों ने स्थानीय व हिन्दी के शब्दों को पूर्ण रूप से विस्थापित कर दिया है। ऐसी परिस्थिति में शिक्षक को सजगता के साथ भाषा शिक्षण का दायित्व निभाना होगा, तभी हमारे बच्चों का शब्द भंड़ार समृध्द होगा और वे समान रूप से अपने को अभिव्यक्त कर सकेंगें।

शब्द भंडार में वृध्दि के उपाय:

1. प्रिन्ट रीच एन्वायर्नमेन्ट का उपयोग - आपको याद होगा, कि एक चर्चा प्रपत्र में प्रत्येक शाला में प्रिन्ट रीच एन्वायर्नमेन्ट पर जोर दिया गया था। इसके अंतर्गत शाला में उपलब्ध सामाग्री को स्थानीय, हिन्दी व अंग्रेजी भाषा के शब्दों मे लिखा गया है। इसका अधिक से अधिक उपयोग करना चाहिए।
2. स्थानीय व हिन्दी भाषा के शब्दों के स्थान पर पूर्ण रूप से स्वीकृत अंग्रेजी शब्दों की जानकारी देना - जैसे - कापी, पेन, मीटर, पम्प, कूलर, फ्रीज, मडगार्ड, ब्रेक इत्यादि।
3. हिन्दी भाषा के शब्दों के स्थान पर ज्यादा प्रचलित अंग्रेजी शब्दों की जानकारी देना -

	हिन्दी भाषा के शब्द	अंग्रेजी भाषा के शब्द
1.	आकाशवाणी	रेड़ियो
2.	दूरदर्शन	टी.वी.
3.	पाठशाला	स्कूल
4.	बत्ती	पेन्सिल
5.	फटफटी	मोटर सायकल

4. स्थानीय व हिन्दी दोनों भाषा एक समान रूप से प्रयुक्त होने वाले शब्दों की जानकारी देना -

	स्थानीय भाषा	हिन्दी भाषा
1.	पानी	पानी
2.	जहाज	जहाज
3.	कुर्सी	कुर्सी
4.	नदी	नदी
5.	कान	कान

5. स्थानीय ,हिन्दी व अंग्रेजी भाषा में प्रयुक्त अलग-अलग शब्दों की जानकारी देना -

	स्थानीय भाषा	हिन्दी भाषा	अंग्रेजी भाषा
1.	पनही	जूता	Shoe
2.	लद्दी	कीचड़	Mud
3.	चिरई	चिड़िया	Bird
4.	पथरा	पत्थर	Stone
5.	गोसाईन	पत्नि	Wife

टीप:- उपरोक्त उदाहरण के सभी शब्द हमारे परिवेश में प्रचलित है। शिक्षक ऐसे शब्दों की अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त कर बच्चों के सीखने में मदद करे।

इससे लाभ:-

1. अपने परिवेश में प्रचलित विभिन्न भाषा के शब्दों से परिचित होगें।
2. शब्द भंडार में वृध्दि होगी।
3. विभिन्न भाषाओं के प्रति सम्मान बढ़ेगा।
4. सीखने व अभिव्यक्ति के अधिक अवसर प्राप्त होगें।
5. सांस्कृतिक स्थानांतरण की प्रक्रिया को गति मिलेगी।

चित्र कार्ड एवं संकेतों से शब्द भंडार

प्राथमिक स्तर पर भाषा सीखने/सिखाने में कई बार हम संकेतो के स्थान पर शब्दों का व शब्दों के स्थान पर संकेतो का उपयोग करते है, और यह प्रक्रिया उम्र भर चलती रहती है। जैसे - बुलाने के लिए सीधा आओ शब्द और बैठने के लिए हाथ से इशारे का उपयोग। धीरे-धीरे बच्चा भाषा उपयोग की इन दोनो विधाओं में दक्ष होता जाता है। प्राथमिक शालाओं में इन दोनों विधाओं के विकास का पर्याप्त अवसर बच्चों को दिया जाना चाहिए, ताकि वे संकेत के लिए शब्द व शब्द के लिए संकेतों का उपयोग करना सीख जाए।

प्रस्तावित गतिविधि:

1. बच्चों को शारीरिक हाव-भाव जिनका उपयोग शब्दों की तरह किया जा सकता है, से परिचित कराना। इसके लिए चित्र कार्ड का उपयोग करें। उदाहरण के लिये -

	चित्र कार्ड	संबंधित शब्द
1		प्रसन्न, खुश
2		उदास, दुखी
3		जीतेंगे, विजयी

2. शब्द के स्थान पर संकेतों का उपयोग -

	शब्द	संबंधित संकेत

1	प्रात:/ संध्या का समय	
2	खतरा	
3	मिल जुल कर कार्य करना	

3. यातायात से सम्बधित संकेत व शब्दों की जानकारी देना, उदाहरण के लिये -

	शब्द	संबंधित संकेत
1	आगे बढ़ो	
2	संकीर्ण पुलिया	
3	सड़क पार करने का रास्ता	

टीप:- इसके अतिरिक्त ऐसे बहुत से संकेत व शब्द हैं जिनका एक दूसरे के स्थान पर उपयोग किया जाता है। शिक्षक ऐसे शब्दों व संकेंतो की जानकारी एकत्र कर बच्चों को परिचित करावें।

<u>इससे लाभ</u>:

1. अभिव्यक्ति कौशल का विकास होगा।
2. विभिन्न प्रकार के संकेतो के लिए शब्द व शब्दों के लिए संकेत का उपयोग करना सीखेगें।
3. गीत, कहानी व नाटकों के प्रस्तुतीकरण करने में सक्षम होगें।
4. भावनाओं की अभिव्यक्ति सरलता से कर सकेगें।
5. भाषा के दोनों विधाओं को समझकर व्यावहारिक उपयोग करना सीखेगें।

प्रश्न सूचक शब्द

बच्चों में आरंभिक भाषायी कौशलों की दक्षता परखने का प्रमुख साधन प्रश्न करना हैं। प्रश्नों के व्दारा हमें यह जानकारी प्राप्त होती हैं कि बच्चे ने प्रश्न को ध्यान से सुना है अथवा नहीं, क्योंकि सही सुनने पर ही बच्चे का बोलना निर्भर है। हम प्रायः प्रश्न सूचक शब्द के रूप में क्या, कौन, कहॉ, कब, कैसे जैसे शब्दों का उपयोग करते हैं। कभी-कभी इन शब्दों के जवाब हमें मजेदार ढंग से प्राप्त होता है, जैसे यह पूछने पर कि तुम कहॉ रहते हो ? जवाब के रूप में बच्चा अपना नाम बतलाता है। इसका अभिप्राय यह नही है कि बच्चा इस प्रश्न का जवाब नहीं जानता, बल्कि वह गलत जवाब इस कारण देता हैं कि इन प्रश्न सूचक शब्दों का सही अर्थ नही जान पाया है।

हमने पूर्व में चर्चा की है कि भाषा मूर्त और अमूर्त दोनों ही परिस्थिति को प्रस्तुत करने का माध्यम है। इस कारण भाषा शिक्षण के समय, विशेषकर प्राथमिक स्तर पर, हमें शब्दों को मूर्त रूप देने का प्रयास करना चाहिए। इससे बच्चों में शब्दों के सम्बंध में सही समझ विकसित होगी। इसी प्रकार प्रश्न सूचक शब्दों को मूर्त रूप देनें के लिए कुछ गतिविधि कर सकते हैं:-

1. प्रश्न सूचक शब्दों को मूर्त रूप देते हुए अर्थ बतलाना:

	प्रश्न सूचक शब्द	शब्द का मूर्त रूप	शब्द का अर्थ
1	क्या		नाम सूचक
2	कौन		व्यक्ति सूचक
3	कब		समय सूचक

4	कहाँ		स्थान सूचक
5	कितना		संख्या व मात्रा सूचक
6	कैसे		साधन/उपाय सूचक
7	किसका		अधिकार सूचक
8	क्यों		कारण सूचक

2. प्रश्न सूचक शब्दों के मूर्त रूप दिखाते हुए प्रश्न करना:

	प्रश्न सूचक शब्दों के मूर्त रूप	पूछे गए प्रश्न	प्राप्त उत्तर
1		यह क्या हैं ?	अंगुर
2		वह कौन है?	लड़की
3		तुम कब ऊठते हो?	6 बजे
4		तुम कहाँ रहते हो?	गॉव में

5		इसमें कितने केले हैं?	तीन
6		तुम घर कैसें जाओगे?	सायकल से
7		यह किसकी कार है?	अनिल की
8		मोहन स्कूल क्यों नही आया?	बीमार है

टीप:- उपरोक्त उदाहरण एक नमूना है। शिक्षक चित्रों व प्रश्नों में परिवर्तन कर प्रश्न सूचक शब्दों के सम्बंध में बच्चों की समझ को और अधिक विकसित कर सकता है।

गतिविधि से लाभ:-

(1) बच्चे प्रश्न सूचक शब्दों से परिचित होगें।

(2) प्रश्नों के सही जवाब देगें।

(3) प्रश्न के अनुसार उत्तर देना सीखेगें।

(4) अपने समूह में प्रश्न सूचक शब्दों का उपयोग करेगें।

(5) बोलने के भाषायी कौशल विकसित होगा।

हिन्दी एवं अंग्रेज़ी एक साथ पढ़ाना

शिक्षा समयानुकुल हो, तभी वह सार्थक होती हैं। इसे हम विषयगत व भाषागत दोनों संदर्भो में समझ सकते हैं। आज वैश्वीकरण के कारण पूरा विश्व एक गांव की तरह हो गया है। जिस प्रकार गांव के लोग आपस में मिलते-जुलते हैं और उनके बीच विविध चीजों का आदान-प्रदान होता है, उसी प्रकार विश्व के देशों के लोग भी आपस में मिल जुल रहे हैं और उनके बीच संस्कृतियों का आदान-प्रदान हो रहा है।

हमारे देश के प्रत्येक प्रान्त के बच्चे दो भाषाओं की जानकारी रखते हैं- (1) स्थानीय या मातृ भाषा (2) हिन्दी भाषा। इस प्रकार प्रत्येक बच्चे आंशिक या पूर्ण रूप से व्दिभाषी (bilingual) होते हैं, किन्तु हमारा लक्ष्य बच्चें को उभयभाषी (Ambilingual) बनाने का होना चाहिए। हमारे देश के संदर्भ में उभयभाषी से तात्पर्य हिन्दी व अंग्रेजी दोनो भाषाओं पर समान पकड़ अथवा अधिकार से है। शायद! इसी सोच के साथ हमारे प्रदेश में प्राथमिक स्तर से अंग्रेजी भाषा का अध्ययन वैकल्पिक रूप में रखा गया हैं। भाषा शिक्षक को इस तथ्य को ध्यान में रखकर कार्य करना होगा। इसके लिए वह यह कर सकता हैं:-

1. दोनो भाषाओं का अध्यापन एक ही काल खण्ड में कराए, विशेषकर कक्षा पहली व दूसरी में।
2. हिन्दी व अंग्रेजी भाषा की पाठ्य पुस्तकों का विश्लेषण कर देखे कि दोनो में कौन-कौन से शब्द समान रूप से आया है- जैसे हिन्दी मे यदि गाय, घर, लड़का, कुत्ता, बहन और अंग्रेजी में cow, house, boy, dog, sister इत्यादि शब्द आया हो तो, इसे साथ-साथ बतलाएं।
3. हिन्दी और उससे सम्बधित अंग्रेजी शब्दों को साथ-साथ सुनने और बोलने का अवसर दें।
4. हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में शब्द कार्ड व चित्र कार्ड का उपयोग करें।
5. भाषा शिक्षण के सिध्दान्तों व नियमों का पालन करें।

इससे लाभ:-

1. दोनों भाषाओं पर समान अधिकार होगा।
2. दोनों भाषाओं में स्थित समानता व अंतर को स्वयं समझने लगेगा।
3. अपने समान समूह में दोनो भाषाओं में बात करेगा इससे अन्य छोटे बच्चों के लिए उपयुक्त निर्मित होगी।
4. शब्द भंडार व ज्ञान में वृध्दि होगी।
5. विश्व समुदाय के साथ प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम होगा।

सही उच्चारण सिखाना

प्राथमिक स्तर विशेषकर कक्षा पहली एवं दूसरी के बच्चों के भाषा शिक्षण के समय विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, क्योकि जरा सी चूक अथवा असावधानी बच्चों मे भाषा सम्बधी त्रुटियों को जन्म दे सकती है, जिसका निराकरण करना बाद में कठिन होता हैं। यद्यपि इन त्रुटियों के होने के बहुत से कारण हैं, फिर भी शिक्षक की जागरूकता से इसे कम किया जा सकता हैं। इसके लिए आइए कुछ गतिविधि करें:-

1. वर्णमाला को श्यामपट पर लिख लेवें। चार्ट/कार्ड का भी उपयोग कर सकते हैं।

2. बच्चों से बारी-बारी वर्णमाला का उच्चारण करावें।
3. प्रत्येक बच्चें के उच्चारण के समय ध्यान से सुनें व गलत उच्चारण वाले वर्ण पर गोल घेरा बनाते जावें।
4. प्रत्येक बच्चें के पढ़ने के बाद जिन-जिन बच्चों ने गलत उच्चारण किया है, सम्बधित वर्णमाला को चित्र चार्ट/कार्ड की सहायता से पुनः उच्चारण करने को कहें।

5. उच्चारण में सुधार नहीं होने पर शिक्षक स्वयं उच्चारण कर बच्चों से भी साथ-साथ उच्चारण करने को कहें।
6. सामान्य रूप से गलत उच्चारित वर्णमाला से शब्द बनाकर बच्चों से बार-बार उच्चारण करावें।

सामान्य रूप से गलत उच्चारित वर्णमाला:- च, छ, न, ण, प, ब, व, स, श, ष, ढ, ढ़, ड़ इत्यादि। इन वर्णमालाओं को एक के स्थान पर दूसरे के लिए प्रयुक्त किए जाने के कारण उच्चारण में त्रुटि होती हैं:- उदाहरण - (1) अच्छा में च के स्थान पर छ का उपयोग करने के कारण अछछा उच्चारित किया जाता हैं। इसी प्रकार अन्य शब्द हैं-

	सही उच्चारित शब्द	त्रुटिपूर्ण उच्चारित शब्द
1.	चासनी	चाछनी
2.	रावण	रावन
3.	गुण	गुन
4.	बकरी	पकरी
5.	परी	बरी
6.	वन	बन
7.	शंकर	संकर
8.	सड़क	शड़क
9.	मनीष	मनीश
10.	मेढक	मेढ़क
11.	पढ़	पढ

टीप - इसके अतिरिक्त भी बच्चों के व्दारा बहुत से शब्दों का गलत उच्चारण किया जाता है। शिक्षक ऐसे शब्दों को चिन्हाकिंत कर बार-बार अभ्यास कराकर उच्चारणगत त्रुटि में सुधार कर सकता है।

गतिविधि से लाभ:-

1. वर्णमाला को सही क्रम से समझेगें।
2. शब्दों का सही उच्चारण करना सीखेगें।
3. सही उच्चारण से पढ़ने, समझने व लिखने में त्रुटि नहीं होगी।
4. भाषा उपयोग करते समय आत्म विश्वास बढ़ेगा।
5. छोटे बच्चों पर सकारात्मक प्रभाव पडेगा।

शब्द भंडार बढ़ाना

अब इन शब्दों पर विचार करते हैं- अटन, नलप, कग, जग इत्यादि। बहुत देर तक गंभीरता से विचार करने पर भी इसका कोई अर्थ समझ नहीं आता। अब इसके कारणों पर विचार करते हैं- ये सभी ऐसे शब्द हैं जहॉ वर्ण एक-दूसरे से असंगत रूप से जुड़े हुए हैं। इसका एक कारण यह भी है कि इन शब्दों का कोई अर्थ नहीं हैं। इसका तात्पर्य यह है कि वर्णो के सुसंगत मेल से बने अर्थपूर्ण शब्द ही, शब्द हैं। कोई शब्द अर्थ पूर्ण है अथवा नहीं इसकी जानकारी ज्यादातर हमें अनुभव से होता हैं- जैसे-ये सभी ऐसे शब्द हैं जिनके बारे में न तो हमने कभी सुना है और न ही किसी को बोलते हुए पाया हैं।

बच्चों का अपना एक भाषायी संसार होता है, जो उनके अनुभवों को समृध्द करता रहता है। प्राथमिक स्तर के भाषा शिक्षक को शाला के आंरभिक दिनों में बच्चों के अनुभवों को ध्यान में रखते हुए छोटे-छोटे शब्दों के विन्यास बताने पर जोर देना चाहिए। इसके लिए आइए गतिविधि करें-

अ	आ	इ	ई	उ
ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ
	औ	अं	अः	
क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श
	ष	स	ह	
	क्ष	त्र	ज्ञ	

1. वर्णमाला को श्यामपट पर लिख लेवें। चित्रित वर्णमाला चार्ट और कार्ड उपलब्ध हो, तो उसे भी रखें।
2. श्यामपट पर लिखें वर्णमाला से वर्णो को जोड़कर बिना मात्रा के अर्थपूर्ण शब्द बनाने का प्रयास करें।
3. यह गतिविधि प्रथम पंक्ति से आरंभ कर शब्द बनाते हुए अन्तिम पंक्ति तक पहुंचें।
4. प्रत्येक पंक्ति से जो भी अर्थपूर्ण शब्द बनता हो उसे श्यामपट के एक किनारे पर लिखते जाए।
5. श्यामपट के किनारे पर लिखे गए अर्थपूर्ण शब्दों के सम्बंध में बच्चों से चर्चा कर जानने का प्रयास करें कि वे इसमें से कितने शब्दों के बारे में पहले से जानते हैं। ऐसे शब्दों को अलग करें।

6. कुछ शब्द ऐसे भी मिलेगें जिनके बारे में बच्चें न जानते हो। ऐसे शब्दों को अलग से लिखें।

गतिविधि के उदाहरण- वर्णमाला के वर्णो को ऊपर से नीचे के क्रम में संयुक्त करने पर निम्न अर्थपूर्ण शब्द बनते हैं- खग, धन, बम, कप, कब, कल, कर, सह, घर, दस, छत्र, कह, जग, जन, रथ, थन, थल, गण, खर इत्यादि।

7. उपरोक्त उल्लेखित शब्दों को बच्चों की जानकारी के आधार पर अलग-अलग लिख लें।

बच्चों के परिचित शब्द	अपरिचित शब्द
धन	गण
बम	खग
कप	छत्र
कब	फन
कल	खर
कर	
सह	
घर	
दस	
सह	
जग	
रथ	

8. अपरिचित शब्दों को प्रतीक के साथ समझायें।

अपरिचित शब्द	प्रतीक	अर्थ
गण		जनता/लोग
खग		पक्षी/चिड़िया

छत्र		राजा के मुकुट के ऊपर स्थित छतरी
फन		सॉप का फैला हुआ सिर
खर		गदहा

गतिविधि से लाभ:-

1. बच्चे वर्ण से शब्द बनाना सीखेगें।
2. अपने अनुभव के आधार पर अर्थपूर्ण व अर्थहीन शब्दों को समझेगें।
3. कुछ नये शब्द सीखेगें।
4. पढ़ना सीखेगें।
5. बोलने और पढ़ने के कौशल का विकास होगा।

शब्दों के अलंकारिक अर्थ

भाषा से समाज परिवर्तित हुआ या समाज से भाषा में परिवर्तन हुआ, इसका जवाब इस बात पर निर्भर है कि भाषा की उत्पत्ति क्यों और कैसे हुई? यह स्पष्ट है कि भाषा की उत्पत्ति समाज की सम्प्रेषणीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हुई है। इसी कारण समाज का स्वरूप ज्यों-ज्यों विकसित होता गया त्यों-त्यों भाषा भी विकसित होती गई। दूसरे शब्दों मे कह सकते हैं कि समाज के स्वरूप में परिवर्तन के साथ भाषा का स्वरूप भी परिवर्तित हुआ।

आज हम जो शब्द सुनते और बोलते है, जरूरी नही है कि वह शब्द आरंभ से ही वैसा ही सुना और बोला जा रहा हो तथा आगे भी वैसा ही सुना और बोला जाएगा। समय के अनुसार उन शब्दों के अर्थ में भी परिवर्तन हुआ है। इनमे से कुछ शब्दों का उपयोग वास्तविक अर्थो से विभिन्न रूप में होने लगता हैं, जिसे उस शब्द का आलंकारिक रूप कहते हैं। बच्चों के परिवेश में भी ऐसे शब्दों का खूब चलन होता हैं। भाषा शिक्षक को ऐसे शब्दों की जानकारी रखते हुए शिक्षण में उपयोग करना चाहिए, ताकि बच्चे अपने आस-पास बोले जाने वाले शब्दों के वास्तविक व आलंकारिक अर्थो को आरंभिक काल से ही जान व समझ सकें।

शब्द	वास्तविक अर्थ	आलंकारिक अर्थ
सोना	बहुमूल्य धातु	प्यारा
हीरा	बहुमूल्य धातु	सबसे प्यारा
कोयला	काला पत्थर	लकड़ी का काला जला अंश
कौआ	काले रंग का पक्षी	ज्यादा बोलने वाला
तोता	हरे रंग का पक्षी	बातों का नकल करने वाला
गाय	पालतु पशु	अत्यंत सीधा
चॉद	आकाशीय पिण्ड	सुन्दर
अंगद	बाली का पुत्र	दृढ़ इच्छा शक्ति वाले
रावण	लंका का राजा	अभिमानी, अहंकारी
कंस	मथुरा का राजा	निर्दयी मामा
मन्थरा	कैकेयी की दासी	लड़ाने-झगड़ाने वाला
लोमड़ी	मांसाहारी पशु	चालाक

टीप:- इसके अतिरिक्त भी बहुत से ऐसे आलंकारिक शब्द है जो बच्चें अपने परिवेश में सुनते हैं। शिक्षक ऐसे शब्दों से बच्चों को परिचित करावें।

इससे लाभ:-

1. बच्चें भाषा के प्रति आकर्षित होगें।
2. शब्द भंडार में वृद्धि होगी।
3. ऐसे शब्दों का उपयोग अपने बोल-चाल में करना सीखेगें।

सामाजिक स्तर के अनुसार शब्दों का उच्चारण तथा मात्रा एवं मानक शब्द

भाषा के सम्बध में यह सर्वमान्य है कि-''भाषा सिखाई नही अपितु प्राप्त की जाती है।'' इसी कथन के सन्दर्भ में हम अक्सर भाषा शिक्षण में परिवेश की महत्ता और उपयोगिता की बात करते है, और यह परिवेश बनता है रहने वाले लोगों से। किसी भी परिवेश में एक ही प्रकार के लोग नही रहते, बल्कि अपने सामाजिक, आर्थिक व शैक्षिक स्थिति के अनुसार वगीकृत होते हैं। भाषा के सन्दर्भ में यह पाया गया है कि एक समान सामाजिक, आर्थिक व शैक्षिक स्तर के लोगों की भाषा एक समान होती है। इसका अर्थ यह भी है कि अलग-अलग सामाजिक, आर्थिक व शैक्षिक स्तर से आने वाले बच्चे एक ही शब्द को अपने-अपने सामाजिक, आर्थिक व शैक्षिक स्तर के अनुसार अभिव्यक्त करते हैं, क्योंकि उन्होनें यही भाषायी शब्द अपने परिवेश से प्राप्त किया हैं। अलग-अलग वर्गो के बच्चो में भाषायी शब्दों में यह अन्तर उच्चारण, मात्रा व शब्द परिवर्तन के रूप में दिखाई देता हैं।

एक जागरूक भाषा शिक्षक को अपनी शाला में दर्ज बच्चों की सामाजिक, आर्थिक व शैक्षिक स्तर की जानकारी रखनी चाहिए। क्योंकि उनकी कक्षा के बच्चे अपने वर्ग से प्राप्त भाषायी शब्दों का उपयोग व्यवहार में करते हैं। इसकी उपयुक्त जानकारी होने पर शिक्षक आवश्यक रणनीति बनाकर इन अन्तरों को कम करने में मदद कर सकता हैं।

कुछ ऐसे शब्दों के उदाहरण:-

	निम्न सामाजिक, आर्थिक व शैक्षिक स्तर में उच्चारण मात्रा व शब्दों का उपयोग	मध्य सामाजिक, आर्थिक व शैक्षिक स्तर में उच्चारण मात्रा व शब्दों का उपयोग	उच्च सामाजिक, आर्थिक व शैक्षिक स्तर में उच्चारण मात्रा व शब्दों का उपयोग
1.	मर	मौत	मृत्यु
2.	जमा	धन	पूंजी
3.	गहु	गेहु	गेहूं
4.	सइकिल	सायकिल	सायकल
5.	परान	प्रान	प्राण
6.	खुर्सी	कुर्सी	कूर्सी
7.	घर	मकान	कोठी
8.	मरघट	शमशान	मुक्तिधाम
9.	बाई	घरवाली	पत्नि
10.	गऊ	गइय्या	गाय
11.	दवई	दवाइ	दवाई
12.	बनियाइन	बनियान	बनयान

13.	ब्यौहर	सूद	ऋण

टीप:- शिक्षक ऐसे अन्य शब्दों की जानकारी प्राप्त कर, उच्चारण, मात्रा व शब्दों मंे परिवर्तन को समझें।

इन्हें जानना क्यों आवश्यक हैं -

1. मानक शब्द सीख सके।
2. शब्दों के उपयोग में समानता हो सकें।
3. वर्गगत भेद कम हो सके।
4. हीन भावना दूर हो सके।
5. समान रणनीति से शिक्षण किया जा सके।

सुनने और बोलने की गतिविधियां

मैने इस साल कक्षा पहली में प्रवेश ले चुके व दूसरी में पढ़ने वाले कुछ बच्चों से लोहा, पोहा, दोस्त, पुस्तक, पेन, इत्यादि शब्दों को बोलने को कहा। पहली कक्षा के बच्चे प्रथम प्रयास में इसमें से दो व दूसरी कक्षाके बच्चे तीन-चार शब्दों को ही बोल पाए। मैने इस प्रक्रिया को बार-बार दोहराया, फिर भी कक्षा एक स्तर के बच्चे कोई न कोई शब्द छोड़ देते थे व दूसरी के बच्चे बार-बार पूछने पर बोल पाए। अब मैने दोनों स्तर के बच्चों से इन शब्दों के बारे में कुछ बोलने को कहा, तो कक्षा एक स्तर के बच्चे चुप रहे, किन्तु कक्षा 2 के कुछ बच्चे बोले जैसे-पोहा-खाते है, पेन-लिखते हैं, दोस्त का नाम लेना इत्यादि। बच्चों से इस चर्चा के आधार पर कुछ सामान्य निष्कर्ष निकलते हैं-

1. बच्चे बहुत सी बातें सुनते हैं, किन्तु सभी बातें उनके स्मरण में एक ही बार में नही आती।
2. सुने हुए में से कितने अंश स्मरण में आती है यह बच्चों की उस शब्द के सम्बंध में पूर्व ज्ञान, सुनने की सक्रियता व रूचि पर निर्भर करता है।
3. इसी प्रकार बोलने में भी बच्चे आरंभिक स्तर पर कही हुई बात को ज्यादातर दोहराते है, अपनी तरफ से उसमे कुछ जोड़ते नही।
4. अपनी तरफ से कुछ बोलना सही ढ़ंग से सुनने पर निर्भर करता है।
5. बच्चे सक्रिय होकर सुने व उस पर अपनी ओर से कुछ कहें, इसके लिए उन्हें समुचित अवसर उपलब्ध कराया जाना आवश्यक हैं।
6. कक्षा में यह समुचित अवसर विभिन्न गतिविधियों के व्दारा उपलब्ध कराया जा सकता हैं।
7. सुनने एवं बोलने की दक्षता विकास के लिए बच्चों के स्तर के अनुसार शिक्षक को गतिविधि का चयन पहले से कर लेना चाहिए।
8. गतिविधि में आवश्यक शिक्षण सामाग्री का उपयोग अनिवार्य रूप से करें।
9. अपने शिक्षण रणनीति की समीक्षा एवं सुधार करते रहे।

इससे लाभ:-

1. शिक्षक को बच्चों के सही सुनने व बोलने मे होने वाली कठिनाईयों की जानकारी होगी।
2. बच्चों के परिवेश के अनुसार गतिविधि कराने में सहायता मिलेगी।
3. बच्चे आपस में मिल-जुलकर सीखेगें।
4. भाषायी कौशल के अगले चरण पढ़ने एवं लिखने के विकास में सहायता मिलेगी।
5. बच्चों के उच्चारण एवं मात्रा सम्बधी त्रुटि में कमी आएगी।

भाषाई कौशल विकसित करने की गतिविधियां

पिछले तेरह अध्यायों में हमने यह जानने का प्रयास किया कि बच्चों में भाषायी कौशलों के विकास हेतु हमें किन मूलभुत बातों पर ध्यान देने की आवश्यकता हैं। इस बीच हमने यह भी जाना कि जो बच्चे कक्षा पहली में प्रवेश लेते हैं, वे शब्दों का उपयोग कैसे व किन अर्थो में करते हैं। बच्चों की भाषायी दुनिया को भली-भाँति समझकर हम भाषायी कौशलो का व्यवस्थित व क्रमबध्द विकास कर सकते हैं। इस क्रम में सुनने और बोलने के भाषायी कौशलों के विकास के लिए कुछ गतिविधियाँ प्रस्तावित हैं।

गतिविधि क्रं 1-

वर्णमाला को सुनने और बोलने का प्रतिदिन अवसर उपलब्ध कराना

पूर्व ज्ञान- बच्चें सभी वर्णो से बने शब्दों को सुनते और बोलते है, किन्तु पहचानते नही।

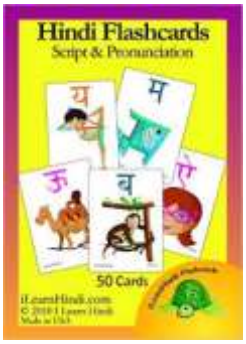

गतिविधि के चरण-

1. शिक्षक वर्णमाला को श्यामपट पर लिख लें। उपलब्ध हो तो चित्रात्मक वर्णमाला चार्ट व कार्ड भी रखे।
2. शिक्षक स्वयं पहले वर्णमाला को बोले और बच्चों से बोलने को कहे।
3. शिक्षक जिस वर्ण को बोले उस पर उंगली अथवा छड़ी भी रखे। हो सके तो कार्ड भी दिखाते जाए।
4. वर्ण का चित्रों से सम्बधित कर भी बोले जैसे-क तो कबूतर का चित्र।
5. अब बच्चों से बारी-बारी सामने आकर वर्णमाला को बोलने को कहे। बच्चों व्दारा गलती किए जाने पर बच्चों से ही सुधारने को कहे। अन्त में शिक्षक सहयोग करें।

6. वर्ण कार्ड बच्चों मे वितरित कर दे। शिक्षक पहले क्रम से वर्ण बोले और कहे कि जिसके पास वह वर्ण कार्ड हो वह सामने आकर खड़ा हो जाए। जैसे-घ बोलने पर घ कार्ड वाला बच्चा सामने आएगा।
7. अब बच्चे से इस गतिविधि को करने को कहे गलती करने पर सुधारें।
8. यह गतिविधि एक सप्ताह तक करावें।

गतिविधि से लाभ -

1. वर्णो को बार-बार सुनने और बोलने का अवसर मिलेगा।
2. वर्णो को पहचानना सीखेगें।
3. बच्चें यह कार्य अपने समूह में भी करने का प्रयास करेगें।
4. वर्णो को सुनने, बोलने और पहचाननें से पढ़ना सीखेगें।
5. सीखने में रूचि लेगें।

<u>गतिविधि क्रं.-2</u> –

<u>कार्ड के खेल में सुनने और बोलने का अवसर उपलब्ध कराना</u>

पूर्व ज्ञान - बच्चे वर्णो को सुनकर बोलना व पहचान करना सीख गए हैं।

गतिविधि के चरण -

1. शिक्षक वर्ण और चित्र कार्ड अपने पास रखे।
2. वर्ण को चित्र के साथ व चित्र को वर्ण के साथ जोड़कर बताए। जैसे-

वर्ण	**चित्र**
क	
ख	

ग	
चित्र	**वर्ण**
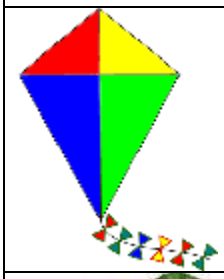	प
	फ
	ब

3. बच्चों को दो समूहों मे बॉट ले। एक समूह को चित्र कार्ड व दूसरे समूह को वर्ण कार्ड दे।
4. शिक्षक किसी एक बच्चे का नाम लेकर पूछे कि उसके पास कौन सा वर्ण कार्ड हैं। बच्चे का बतलाने पर उससे सम्बधित चित्र कार्ड वाले बच्चे से कहे कि वह वर्ण कार्ड वाले बच्चे के पास आकर बैठ जाए।
5. इस गतिविधि को तब-तक कराए जब-तक सभी वितरित वर्ण और चित्र कार्ड रखे बच्चों की जोड़ी न बन जाए।
6. यह गतिविधि तीन दिन तक कराए।

गतिविधि से लाभ:-

1. बच्चें वर्णो को स्वतंत्र रूप से पहचानना सीखेगें।
2. वर्ण को वर्णो के प्रतीत से व प्रतीक को वर्णो से जोड़ना सीखेगें।
3. बच्चों में स्वयं करके सीखने की आदतों का विकास होगा।

गतिविधि क्रं.-3

कुर्सी के खेल में सुनने और बोलने का अवसर उपलब्ध कराना

पूर्व ज्ञान - बच्चे स्वतंत्र रूप से वर्णो को पहचानकर चित्रों से संयुक्त करना सीख गए हैं।

गतिविधि के चरण -

1. शिक्षक 10 कुर्सी पंक्तिबध्द रखें। वर्णमाला के दो पंक्ति अर्थात क, ख, ग, घ, ड. और च, छ, ज, झ, ञ कुर्सी के पीछे क्रम से लिख दें।
2. इन्हीं दो पंक्ति से सम्बधित वर्ण कार्ड बच्चों में वितरित करें।
3. शिक्षक वर्ण बोले और बच्चों से कहे कि जिसके पास उस कार्ड का कार्ड हो वह वर्ण का नाम बोलकर सम्बधित कुर्सी पर बैठ जाए।
4. अब कुर्सी को अव्यवस्थित रूप से रखें अर्थात वर्ण के क्रम मे न रखें।
5. बीच का कोई भी वर्ण बोलकर सम्बधित कार्ड धारी बच्चे को उस पर बैठने को कहें।
6. यह गतिविधि क्रमशः सभी वर्ण पंक्ति व बच्चों से कराए।
7. यह गतिविधि तीन दिन तक कराए।

गतिविधि से लाभ:-

1. बच्चों में वर्णमाला के सम्बंध में स्थायी समझ विकसित होगी।
2. बार-बार गतिविधि के द्वारा वर्णो को सुनने और बोलने वर्णमाला याद हो जाएगा।
3. वर्णो को व्यवस्थित और अव्यवस्थित दोनों रूपों में पहचानना सीखेगें।

गतिविधि क्रं.-4

चित्र और कार्ड खोजों खेल से सुनने और बोलने का अवसर उपलब्ध कराना

पूर्व ज्ञान - बच्चे वर्णमाला को पूर्ण रूप से बिना किसी प्रतीक के पहचानना सीख गए हैं।

गतिविधि के चरण -

1. वर्ण और चित्र कार्ड को कक्षा में अलग-अलग जगह पर रख दे।

2. अब कक्षा के किसी एक बच्चे का नाम लेकर बुलाए जैसे-रमेश और उससे कहे कि अपने नाम के प्रथम वर्ण र से सम्बधित कार्ड खोजें व मिलने पर बोलकर बताए।
3. किसी दूसरे छात्र को उसी वर्ण को दिखाकर कहे कि वह उससे सम्बधित चित्र कार्ड खोजे और मिलने पर किस चीज का का बना है बोलकर बताएं।
4. यह गतिविधि कक्षा के सभी छात्रों से बदल-बदल कर करावें।
5. वर्ण से चित्र कार्ड खोजने के बाद अन्य छात्र को नाम लेकर बुलाए जैसे-अनिता। उससे उसके नाम के प्रथम वर्ण से सम्बधित चित्र कार्ड खोजने के लिए कहे और दूसरे छात्र को वर्ण कार्ड।
6. इस गतिविधि को बदल-बदलकर कराते रहे।

गतिविधि से लाभ:-

1. अपने व अन्य बच्चों के नाम से सम्बधित सभी वर्णो व उसके प्रतीकों के बारे में जानेगें।
2. वर्ण के साथ-साथ शब्दों को भी बोलना, पहचानना और पढ़ना सीखेगें।
3. सक्रिय रहकर कार्य करेगें।

<u>गतिविधि क्रमांक 05</u>

<u>परिचय के खेल में सुनने और बोलने का अवसर उपलब्ध कराना</u>

पूर्व ज्ञान - बच्चे छोटे-छोटे शब्दों को सुनकर बोलना जानते है।

गतिविधि के चरण -

1. शिक्षक अपने बारे में बच्चों को बतलाएगा-जैसे-नाम, माता/पिता का नाम, गांव इत्यादि।
2. कक्षा के किसी एक बच्चे को खड़ा कर उससे उसका नाम पूछेगा-जैसे-तुम्हारा क्या नाम है? जवाब मंे केवल नाम बोलने पर शिक्षक बतलाएगा कि जवाब पूरे वाक्य में देना है जैसे-मेरा नाम कमलेश है।
3. अन्य बच्चों से इसी प्रकार पिता/माता का नाम, गांव का नाम व कक्षा का नाम पूछना है।
4. इस गतिविधि में जानकारी लेने व देने की प्रक्रिया बढ़ते क्रम में करें अर्थात एक ही दिन बहुत सी जानकारी न लें।

5. सभी बच्चों से छोटी-छोटी जानकारी लेने के पर्याप्त अभ्यास के पश्चात् पूर्ण परिचय लेने व देने को प्रेरित करें।
6. सभी बच्चों से इस प्रकार परिचय प्राप्त करने के अभ्यास के बाद बच्चों को आपस में एक दूसरे का परिचय लेने व देने को कहें।

गतिविधि से लाभ:-

1. बच्चें सही ढंग से बोलना सीखेंगें अर्थात आवश्यकतानुसार अपने तरफ से कुछ शब्दों का उपयोग करेंगें।
2. बच्चों में हीचक दूर होगी।
3. वाक्य बोलना सीखेगें।
4. उच्चारण में सुधार होगा।
5. एक दूसरे के बारे में जानेगें।

<u>गतिविधि क्रमांक 06</u>

<u>गीत व कविताओं के द्वारा सुनने और बोलने का अवसर उपलब्ध कराना</u>

पूर्व ज्ञान - बच्चें छोटे-छोटे वाक्य बोलना जानते है।

गतिविधि के चरण -

1. शिक्षक गीत/कविता को श्यामपट पर लिखें।
2. लिखी हुई गीत/कविता के एक-एक शब्द को बोलकर बच्चों को सुनाये।
3. गीत/कविता के प्रत्येक पंक्ति को सस्वर व लयबद्व बच्चों को सुनाए तथा दोहराने को कहें।
4. गीत/कविता के दो-दो पंक्ति को सस्वर व लयबद्व सुनाए तथा दोहराने को कहें।
5. अन्त मे पूरी कविता का सस्वर व लयबध्द सुनाये तथा दोहराने को कहे।
6. बच्चो से बारी-बारी से कविता सस्वर व लयबद्ध सुनाने को कहे। गलती होने पर स्वयं सुनाकर बतायें।
7. यह गतिविधि तब तक कराये जब तक सभी बच्चों को कविता सुनाना और दोहराना न आ जाये।

गतिविधि से लाभ:-

1. गीत, कविता का सस्वर वाचन करना सीखेगें।
2. शब्दों के उतार-चढ़ाव को समझेगें।
3. शुध्द उच्चारण करना सीखेगें।

<u>गतिविधि क्रमांक 07</u>

<u>कहानी के द्वारा सुनने और बोलने का अवसर उपलब्ध कराना</u>

पूर्व ज्ञान - बच्चे हाव-भाव के साथ सुनना और बोलना जानते है।

गतिविधि के चरण -

1. शिक्षक बच्चों के रूचि के अनुसार कहानी हाव-भाव के साथ सुनाये। आवश्यकतानुसार कहानी का चित्र भी रखें।
2. कहानी सुनाते समय बीच-बीच में छोटे-छोटे प्रश्न भी पूछे।
3. कहानी पूरा होने के बाद किसी एक बच्चे को सुने हुए कहानी को सुनाने को कहे।
4. शिक्षक प्रत्येक बच्चें को घर से कहानी सुनकर आने को कहे।
5. बच्चों को कक्षा में कहानी सुनाने को कहें।
6. यह अवसर क्रमबध्द रूप से सभी बच्चों को उपलब्ध करावें।

गतिविधि से लाभ -

1. कल्पना शक्ति का विकास होगा।
2. कहानी की सीख चेतन/अवचेतन मन को सकारात्मक रूप से प्रभावित करेगा।
3. परिस्थिति के अनुसार बोलना सीखेगा।
4. भावनात्मक विकास होगा।
5. शब्द भंडार में वृध्दि होगी।

<u>गतिविधि क्रमांक 08</u>

<u>चित्र व्दारा सुनने और बोलने का अवसर उपलब्ध कराना</u>

पूर्व ज्ञान - बच्चे कल्पना करके चीजों/परिस्थितियों के बारें में बोलना जानते हैं।

गतिविधि के चरण -

1. शिक्षक सभी बच्चों को चित्र ध्यान से देखने को कहें।
2. चित्र देखने के बाद बच्चों से पूछे कि उन्होनें चित्र में क्या-क्या देखा।
3. चित्र में स्थित चीजों के अनुसार पूछे कि चित्र किससे सम्बधित है।
4. चित्र का सही पहचान ज्ञात होने के बाद बच्चों से पूछे कि वे चित्र के बारे में क्या-क्या जानते हैं। बच्चों के बतलाते समय शिक्षक मार्गदर्शन करें।
5. दूसरा चित्र दिखाकर बच्चों को स्वयं गतिविधि करने दे।

गतिविधि से लाभ -

1. अपने विचारों को अभिव्यक्त करना सीखेगें।
2. चीजों को भिन्न तरीके से देखने का दृष्टिकोण विकसित होगा।
3. अनुभवों का विकास होगा।

गतिविधि क्रमांक 09

शब्दों के खेल में सुनने और बोलने का अवसर उपलब्ध कराना

पूर्व ज्ञान - बच्चे छोटे-छोटे शब्दों को बोलना जानते है।

गतिविधि के चरण -

1. शिक्षक बच्चों को कुछ सरल व परिचित शब्द/चित्र कार्ड दे। जैसे-गाय, बन्दर, घर, नल, मछली, आम इत्यादि।
2. बच्चों से कहे कि शब्द/चित्र कार्ड को ध्यान से देखें।
3. देखने के बाद बच्चो से पूछे कि उनके हाथ में कौन सा शब्द/चित्र कार्ड हैं और वे उसके बारे में क्या जानते हैं।
4. जवाब नही मिलने पर शिक्षक स्वयं उदाहरण देकर बतलायें जैसे घर-घर में हम रहते हैं। यह ईंट व मिट्टी का बना होता है।
5. इसके बाद भी यदि कुछ बच्चे जवाब न दे पाये तो जवाब देने वाले बच्चों को सहयोग करने के लिए कहें।
6. यह गतिविधि तब तक कराये जब तक सभी बच्चें उनको प्राप्त शब्द/चित्र कार्ड पर कुछ बोल न ले।

गतिविधि से लाभ -

1. चित्र देखकर शब्दों का अर्थ जानेगें।
2. धीरे-धीरे शब्दों को पढ़ना सीखेगें।
3. अपने अनुभव के आधार पर शब्दो का उपयोग कर बोलना सीखेगें।
4. एक-दूसरे का सहयोग करना सीखेगें।
5.

गतिविधि क्रमांक 10

मित्र के सम्बध में जानकारी द्वारा सुनने और बोलने का अवसर उपलब्ध कराना

पूर्व ज्ञान - बच्चे दिए गए परिस्थिति के सन्दर्भ में थोड़ा-थोड़ा बोलना सीख गए है।

गतिविधि के चरण -

1. शिक्षक बच्चों से कहे कि वे अपने प्रिय दोस्त के साथ बैठ जाए।
2. अब बच्चों से कहे कि वे अपने मित्र से चर्चा कर जानकारी प्राप्त करें कि उन्हे कौन सा रंग अच्छा लगता है, उनके घर में कितने सदस्य है, उन्हे कौन सा विषय पसंद है इत्यादि।
3. शिक्षक किसी एक बच्चें की जोड़ी को बुलाकर स्वयं पूछे और करके बतलाए।
4. प्रत्येक जोड़ी के बच्चे को एक-दूसरे के बारे में इसी प्रकार बतलाने को कहें।
5. बच्चे जहॉ चुप या रूक जाए वहॉ शिक्षक मदद करें।

गतिविधि से लाभ -

1. कक्षा के सभी बच्चे एक-दूसरे से परिचित होगें।
2. समूह में चर्चा करना सीखेगें।
3. एक-दूसरे की भाषायी त्रुटियों में सुधार कर सकेगें।
4. सुने हुए बात को क्रम से प्रस्तुत करने की क्षमता विकसित होगी।
5.

<u>गतिविधि क्रमांक 11</u>

<u>दूरदर्शन पर कार्यक्रम दिखाकर सुनने और बोलने का अवसर उपलब्ध कराना</u>

पूर्व ज्ञान - बच्चे एक-दूसरे से अपने अनुभवों को साझा करना जानते हैं।

गतिविधि के चरण -

1. शिक्षक बच्चों के स्तर व रूचि के अनुसार छोटा कार्यक्रम दिखाए।
2. कार्यक्रम को ध्यान से सुनने व देखने को कहें।
3. कार्यक्रम देखने के पश्चात छोटे-छोटे प्रश्न करे। जैसे-मीना कौन है?, मीना के साथ कौन सा पक्षी है इत्यादि।
4. सभी बच्चों को प्रश्नों के उत्तर देने का अवसर दें।
5. देखे गए कार्यक्रम के सम्बधं मे बच्चों को आपस में चर्चा करने को कहें।
6. घर में बच्चों के व्दारा देखे जाने वाले कार्यक्रम के सम्बध में भी पूछे।

गतिविधि से लाभ -

1. ध्यान से सुनना सीखेगें।
2. अपना विचार रखना सीखेगें।
3. तर्क पूर्ण ढ़ंग से सोचना सीखेगें।
4. अच्छी बातों को अपने जीवन से जोड़ेगें।
5. पहल करना सीखेगें।

<u>गतिविधि क्रमांक 12</u>

<u>टेलीफोनिक वार्ता के व्दारा सुनने और बोलने का अवसर उपलब्ध कराना</u>

पूर्व ज्ञान - बच्चे घरों/आस-पास में फोन पर बात करते सुनते और देखते हैं तथा स्वयं बात करना जानते हैं।

गतिविधि के चरण -

1. शिक्षक खिलौने का फोन अपने साथ लावें।
2. फोन बच्चों को दिखाकर उसकी प्रक्रिया बतायें जैसे- कैसे नम्बर लगाते है, फोन उठाते है और बात खत्म होने पर काटते है।
3. एक बच्चे को फोन देकर शिक्षक स्वयं उससे ऐसे छोटे-छोटे शब्दों और वाक्यों में बात करे, जिसका जवाब बच्चें सरलता से दे सकें।
4. शिक्षक और बच्चों के बीच का वार्तालाप ऐसा हो कि बच्चे स्व-स्फूर्त जवाब दे सकें।
5. अन्त में शिक्षक बच्चों की जोड़ी बनाकर फोन देते हुए कहे कि वे अपने मन के अनुसार आपस में एक-दूसरे से वार्तालाप करें।
6. बच्चो के बीच होने वाली वार्तालाप पर शिक्षक ध्यान रखें। गलत होने पर तुरन्त सुधार कर सही वार्तालाप के ढ़ंग की जानकारी दें।

गतिविधि से लाभ -

1. बच्चें आपस में बात करना सीखेगें।
2. सन्दर्भ के अनुसार शब्द का उपयोग करना सीखेगें।
3. अपने भावों के अभिव्यक्त कर सकेगें।

4. सुनने और बोलने के कौशल का सर्वोत्तम विकास होगा।

समझने की प्रक्रिया

आपने गोल पहिए/चक्के को बड़ी तेजी से घुमते हुए देखा होगा। देखने पर पता ही नही चलता कि घुमने का क्रम कहॉ से आरंभ हो रहा है और कहां पर समाप्त। किन्तु यह तो निश्चित है कि उसके आरंभ और अंत के बिन्दु होते हैं। इसी प्रकार भाषायी कौशलों के विकास में सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने का क्रम निर्धारित किया गया है, किन्तु इस सब के मध्य समझने का स्थान कहां पर है, यह स्पष्ट नहीं है। बहुत से शिक्षाविदों ने पढ़ने में ही समझने को सम्मिलित माना है।

यदि वृहद अर्थ में देखा जाए तो जब बच्चा सबसे पहली बार सुनता है, तो उस सुनी हुई ध्वनि के संबंध में कुछ-न-कुछ प्रतिबिम्ब उसके मतिष्क पर बनता होगा अर्थात समझ विकसित होगी। इसी प्रकार जब बच्चा सुनी हुई ध्वनि के अपने अनुभवों के आधार पर सबसे पहला वर्ण/शब्द बोलता है, तब भी उस वर्ण/शब्द के संबंध में कुछ-न-कुछ समझता होगा। पर यहां हम यह भी देख रहे हैं कि इस प्रकार के सुनने और बोलने में हम जिस समझ की बात कर रहे है, वह एक-दूसरे में उसी प्रकार से गुथ्थम-गुथ है, जिस प्रकार तेज गति से चलते हुए चक्के में आरंभिक और अंतिम बिन्दू होती है। आगे के अनुभवों में हम यह भी पाते है कि सुनना, समझना, बोलना, समझना और फिर सुनना ये सब साथ-साथ अवचेतन रूप में स्व-स्फुर्त रूप से होता रहता है। इसका प्रमाण यह है कि जब हम किसी बच्चे से सुने हुए अथवा बोले हुए वर्ण/शब्द के बारे में पूछते है तो वह स्पष्ट करने में असमर्थ होता है।

इस प्रकार सूक्ष्म अर्थ में - 'समझना किसी वर्ण/शब्द के संदर्भ में वह क्रिया है जो हमारे चेतन मन में स्पष्ट प्रतिबिम्ब बनाए और जिसकी हम स्पष्ट व्याख्या कर सकें।' सुनने और बोलने के भाषायी कौशलों के विकास क्रम में हमारे सामने यह स्थिति बार-बार आती है कि जब हम किसी बच्चे से सुने अथवा बोले हुए वर्ण/शब्द का अर्थ पूछते है तो वह बतलाने में असमर्थ होता है। इसी प्रकार हम यह भी पाते है कि बच्चे बहुत से शब्दों को पढ़ सकते है किन्तु उसका अर्थ नहीं जानते। इन तथ्यों से स्पष्ट है कि बच्चा पहले पढ़ना जानता है, समझना बाद में। आगे चलकर पढ़ने व समझने तथा समझने व पढ़ने के बीच वहीं स्थिति निर्मित होती है, जैसी स्थिति तेज गति से चलती हुए चक्के के आरंभ और अंत के बीच होती है। फिर भी स्पष्टता के लिए समझने को पढ़ने के बाद और पढ़ने में ही अंर्तनिहित किया गया है।

इसे जानना क्यों आवश्यक है -

1. बच्चों की मानसिक क्रिया को समझ सकें।
2. सीखने-सीखाने के निर्धारित क्रम को जान सके।
3. बच्चों को किस क्रम में कठिनाई हो रही है, यह जान सके।

4. सही और उपयुक्त शिक्षण रणनीति बना सके।
5. उपयुक्त माहौल उपलब्ध करा सके।

प्रथम दो भाषायी कौशलों - सुनने और बोलने के विकास के लिए हमने बहुत सी गतिविधियॉ की हैं। वैसे तो बच्चे शाला आने के पूर्व ही सुनना और बोलना जानते है, किन्तु शाला में की गई यह सुनियोजित गतिविधि आगे चलकर पढ़ने व समझने में बहुत सहायक सिध्द होती है क्योंकि भिन्न-भिन्न गतिविधियों से बच्चे वर्ण व उससे बने शब्दों को स्पष्ट रूप से पहचानना सीखते है। इसका अभिप्राय यह है कि नियोजन के साथ बच्चों को सुनने और बोलने का अवसर उपलब्ध नहीं कराया गया तो बच्चे ठीक से पढ़ना नहीं सीख पायेगें।

हमारे घरों के दरवाजे पर शुभ-लाभ लिखा होता है। मैंने कक्षा तीसरी में पढ़ने वाले कुछ बच्चों को उसे दिखाकर पढ़ने को कहा। बच्चों ने बिना रुके, बिना कुछ सोचे पढ़कर बतलाया- शुभ-लाभ। अब मैने बच्चों से पुनः प्रश्न किया कि इसमें शुभ कौन सा शब्द है और लाभ कौन सा। बच्चें कुछ देर रूककर सोचते रहे और फिर उन्होने बतलाया कि ये शुभ यह है और यह लाभ है। अब मैने फिर से पूछा कि शुभ और लाभ को अलग-अलग कर पढ़ो अर्थात शुभ और लाभ का प्रथम व व्दितीय वर्ण कौन सा है तथा उसमें कौन सी मात्रा का उपयोग हुआ है। बच्चे काफी देर तक चुप रहे, किन्तु मन में धीरे-धीरे कुछ सोचते भी रहे। बच्चों की चुप्पी देखकर मै समझ गया की बच्चों को अभी भी वर्ण व मात्रा को पहचानने में कठिनाई हो रही है। पहले उनके व्दारा जो जवाब दिए गए थे वह उनके अनुभवों पर आधारित थे। जब मैनें कारण जानने का प्रयास किया तो पाया कि:-

1. बच्चों ने वर्ण व मात्रा की जानकारी सामान्य तरीके से प्राप्त की है अर्थात वर्ण व मात्रा की स्पष्ट पहचान नहीं हो सकी है।
2. केवल शब्दों के उच्चारण करने को ही पढ़ना आना मान लिया जाता है । जैसे इन बच्चों ने दरवाजे पर लिखे शुभ-लाभ को झट से उच्चारित कर दिया था।
3. यदि बच्चे वर्ण व मात्रा की पहचान के साथ शब्दों को पढ़ भी ले तो यह आवश्यक नहीं है कि वह उस शब्द का अर्थ भी जानते हों।
4. भाषायी कौशलों के क्रमिक व सुदृढ़ विकास के लिए प्रत्येक कौशल के अनुरूप सुनियोजित गतिविधियां करानी अत्यंत आवश्यक है।
5. किसी भी एक कौशल का अपर्याप्त विकास दूसरे कौशलों के विकास को प्रभावित करता है।
6. सभी कौशल एक-दूसरे से संबंधित है।

समझ के साथ पढ़ना

जब शिक्षक अपनी कक्षा में कोई पाठ पढ़ाना आरम्भ करता है तो वह पाठ की एक पंक्ति को पहले खुद पढ़ता है और फिर बच्चों से उसे दोहराने को कहता है। बच्चे अपनी पाठ्य-पुस्तक को देखकर शिक्षक के बाद उस पंक्ति को दोहराते हैं। शिक्षक पाठ समाप्त करके जब बच्चों से पढ़ने को कहता है, तो कक्षा के केवल पांच-सात बच्चे ही उस पाठ को पढ़ने को तैयार होते हैं। उनमें भी केवल दो-चार बच्चे ही पाठ को सही ढ़ंग से पढ़ पाते हैं। जब तक कक्षा के सभी बच्चे पाठ को समझकर पढ़ने में दक्ष न हो जाएं, तब तक शिक्षण अधूरा ही माना जाएगा। सभी बच्चे पठन कौशल में दक्ष हो जाएं, इसके लिए शिक्षक को कुछ तरीके अपनाने होंगें-

1. दोहराने और पढ़ने के अन्तर को स्पष्ट रूप से ध्यान में रखना होगा। जैसे-शिक्षक ने खरगोश और कछुए की कहानी पढ़ाई। पढ़ाते समय शब्द आया ''घमण्डी''। बच्चा ने पढ़ते समय घमण्डी ही पढ़ा, किन्तु घमण्डी का अर्थ पूछने पर चुप रहा तो यह बच्चे व्दारा उस शब्द को दोहराना कहा जाएगा, पढ़ना नहीं।
2. शिक्षक पाठ दोहराने के लिए नहीं, समझने के लिए पढ़ाए अर्थात पाठ पढ़ाते समय प्रत्येक पंक्ति के एक-एक शब्द का अर्थ स्पष्ट करते जाएं।
3. बीच-बीच में बच्चो से प्रश्न करते रहें। बच्चों से प्राप्त जवाब के आधार पर जानकारी मिलेगी कि बच्चे सही ढ़ंग से पढ़ व समझ रहे हैं अथवा नही।
4. शब्दों/वाक्यों का अर्थ स्पष्ट करने के लिए स्थानीय परिवेश के अनुरूप उदाहरण दे।
5. नए पाठ पढ़ाने के पहले उस पाठ को स्वयं पढ़ें और देखें कि उस पाठ में किन बातों पर ज्यादा ज़ोर दिया गया हैं।
6. अपना ध्यान सभी बच्चों पर क्रेन्द्रित रखें अर्थात सभी बच्चों को समान अवसर दें।
7. बच्चों मे विकसित पठन कौशल की जॉच करते रहें।

इससे लाभ -

1. सभी बच्चे समझ के साथ पढ़ना सीखें।
2. समझ के साथ पढ़ने से बच्चे अपने को ज्यादा आत्मविश्वास के साथ अभिव्यक्त कर सकेगें।
3. तार्किक क्षमता का विकास होगा।
4. साहित्यिक गतिविधियों में रूचि बढ़ेगी।
5. भाषायी कठिनाईयों का निराकरण अपने स्तर पर करने का प्रयास करेगें।

अब हम अपने यहॉ शालाओं में प्रचलित भाषा शिक्षण के तरीकों पर नजर डालते हैं। जैसे ही शाला खुलती है, कक्षा के श्याम पट पर वर्णमाला लिख दी जाती है। कक्षा के आरम्भ में शिक्षक उस वर्णमाला को क्रम से बोलता है और बच्चे उसे दोहराते हैं। कुछ दिनों बाद स्वर से सम्बधित वर्णमाला के लिए मात्राओं के प्रतीक और उससे बनने वाले एक-एक, दो-दो शब्द भी श्याम पट पर लिखे जाते हैं। बच्चे बार-बार इसी को बोलते रहते है और यह इतना अधिक हो जाता है कि बच्चे बिना कुछ सोचे-समझे वर्णमाला और कुछ छोटे-छोटे शब्दों को बोलने लगते हैं। बच्चों के व्दारा इन वर्णो व शब्दों के बोलने/दोहराने को ही हम पढ़ना आना मानकर आगे बढ़ जाते हैं। जिस प्रकार ऊंची छत पर चढ़ने के लिए सीढ़ी के प्रत्येक पायदान पर कदम रखना होता है, उसी प्रकार भाषा शिक्षण में भी हमें कुछ नियमों का पालन करना चाहिए, जिसमें क्रमबध्दता व नियोजित शिक्षण सर्व प्रमुख और महत्वपूर्ण हैं। सभी बच्चे पढ़ने में दक्ष हो इसके लिए आवश्यक है-

1. बच्चों को पढ़ने का अभ्यास प्रतिदिन कराये।
2. पढ़ने का स्तर क्रमबध्द हो अर्थात वर्ण, बिना मात्रा के शब्द व मात्रा सहित शब्द।
3. शब्दों को पढ़ने व समझने के बाद ही वाक्य पढ़ावें।
4. शब्दों व वाक्यों को पढ़ना सीखाते समय ही अर्थ के सम्बध में समझ विकसित करने का प्रयास करें अर्थात समग्रता में पढ़ना सिखाए।

<u>इससे लाभ</u> -

1. बच्चे समग्रता के साथ पढ़ना सीखेगें।
2. प्रतिदिन कुछ नये शब्दों/वाक्यों व उनके अर्थो से परिचित होगें।
3. बच्चों का व्यावहारिक अनुभव सुदृढ़ होगी।
4. भाषा उपयोग में सहजता महसूस करेगें।
5. शाला आने में रूचि लेगें।

हम प्रायः विभिन्न चीजों के सन्दर्भ में ''समझ'' की बात करते हैं जैसे- उसने संख्याओं की क्रमबध्दता को नही समझा, उसे ग्रहण की अवधारणा समझ में नही आई, उसने गद्यांशो/पद्यांशो का अर्थ नही समझा इत्यादि। इसी प्रकार व्यावहारिक और दैनिक जीवन की बहुत सी क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं में भी समझ की बात करते है जैसे- उसने समझ दिखाई होती तो बात आगे नही बढ़ती, उसने समझा नही इसी कारण काम बिगड़ गया इत्यादि। शैक्षणिक और व्यावहारिक दोनो की सन्दर्भो में समझकर गम्भीरता से विचार करने के पश्चात् कह सकते हैं कि-''समझ एक मानसिक क्रिया हैं जो प्रत्येक व्यक्ति

में प्रत्येक चीजों/परिस्थितियों के सन्दर्भ में अलग-अलग ढ़ंग से कार्य करती हैं।'' इस आधार पर यह स्पष्ट है कि-

1. समझ का विकास व्यक्ति के परिवेश और उसमें उपलब्ध अवसर पर निर्भर करता हैं जैसे- घुड़सवारी की सही समझ जितनी जल्दी व पूर्णता के साथ घुड़सवार के परिवार के बच्चों में विकसित होगी, उतनी शीघ्रता और पूर्णता के साथ सामान्य परिवार के बच्चों में नही होगी।
2. समझ के विकास में उत्प्रेरक (stimulus) की भूमिका महत्वपूर्ण होती हैं जैसे-एक बच्चा जब दूसरे बच्चे को आग में जलते हुए देखता है तो आग के सम्बंध में उसकी समझ और ज्यादा विकसित होती है।
3. समझ स्थायी और अस्थायी दोनो होती है। यह व्यक्ति की उम्र, समय और चीजों के सन्दर्भ में बदलते अनुभवों के अनुसार परिवर्तित होती है।
4. कुछ लोग धारणा और समझ दोनो को एक मानते हैं। धारणा स्वयं के व दूसरे के, दोनों ही के अनुभवों से बनती है, जबकि समझ स्वयं के अनुभवों से ही विकसित होती है।

इसे जानना क्यों आवश्यक हैं ?-

1. रोचक ढ़ंग से शिक्षण कर सकें।
2. उपयुक्त परिवेश उपलब्ध करा सकें।
3. समान समझ विकसित कर सकें।

सुनने और बोलने के कौशल के विकास की कठिनाइयां

सुनने और बोलने के भाषायी कौशलों के विकास हेतु हमने बहुत-सी गतिविधियॉ की हैं। इन गतिविधियों के सफलतापूर्वक संचालन के बाद हम कह सकते है कि हमारी शाला के अधिकांश बच्चे वर्ण/शब्दों को पहचान कर बोलने मे सक्षम होगें। ऐसे बच्चों को पढ़ना, सीखना उन बच्चों की अपेक्षा सरल होगा, जिन्होने वर्ण/शब्दों को बिना पहचाने ही बोलना सीखा होगा। बच्चे पढ़ना कैसे सीखते है, इस प्रश्न का उत्तर देना बहुत ही कठिन हैं। हम पाते है कि एक ही कक्षा में दर्ज सभी बच्चे एक समान ढ़ंग से नही पढ़ पाते, जबकि उन्हे शिक्षक व्दारा एक ही पाठ्यपुस्तक/पाठ्य-वस्तु का अध्यापन समान रूप से कराया जाता है। फिर ऐसा क्या कारण है कि हमारे कक्षा के सभी बच्चे समान रूप से पढ़ना नही सीख पाते। इस बात पर गम्भीरता से विचार करने पर कुछ कारण स्पष्ट रूप से नजर आते हैं-

1. बच्चों मे भाषायी कौशलों के सही विकास में उनके भाषायी परिवेश महत्वपूर्ण स्थान होता है। जिन बच्चों का भाषायी परिवेश अल्प विकसित व संकुचित होता हैं, वे बच्चे विलम्ब/कठिनाई से पढ़ना सीखते हैं।
2. बच्चे वर्णमाला के रूप में स्वर वर्णा को पहचानते है, किन्तु वर्णो मे स्वर का उपयोग कर पढ़ नही पाते।
3. शिक्षक भी भाषा शिक्षण के दौरान बिना किसी पूर्व तैयारी के कक्षा में आते हैं। उनके व्दारा पढ़ाई जाने वाले पाठ्य-वस्तु का प्रस्तुतीकरण उपयुक्त व क्रमबध्द ढ़ंग से नही होने के कारण बच्चे शब्दों को सरल तरीके से पढ़ना नही सीख पाते।
4. ऐसे कई वर्ण हैं, जिनका उच्चारण बच्चों के परिवेश/कक्षा एवं शिक्षको के व्दारा गलत ढ़ंग से किया जाता है। इससे बच्चे भी उन वर्णो का गलत उच्चारण करते हैं जो उनके पढ़ने के भाषायी कौशल के विकास में बाधा डालता है।
5. प्रायः शालाओं में बच्चों के पढ़ने के लिए पाठ्य-पुस्तक के अतिरिक्त अन्य पठन सामाग्री का अभाव होता है। बच्चे विभिन्न कारणो से पाठय-पुस्तक को बार-बार पढ़ने में अरूचि महसूस करते है, जिसका प्रभाव उनके पढ़ने के कौशल विकास पर पड़ता है।
6. शिक्षक व्दारा कक्षा में कुछ चयनित बच्चों को ही पढ़ने का अवसर दिया जाता है। इससे अन्य बच्चे उबाउपन महसूस करते हुए पढ़ने से दूर होने लगते है।

इससे लाभ -

1. बच्चो के पढ़ना, सीखने मे आने वाली कठिनाईयों के बारे में जानेगें।
2. कठिनाईयों को जानकर दूर करने हेतु रणनीति बना सकेगें।

3. प्रत्येक बच्चे की कठिनाईयो पर ध्यान केन्द्रित कर सकेगें।

यह बात सही है कि बच्चों के भाषायी कौशलों के विकास मे परिवेश का स्थान महत्वपूर्ण होता है, किन्तु यह भी उतनी ही सही है कि हम किसी बच्चे को उसके परिवेश के भरोसे ही नही छोड़ सकते। एक अच्छा शिक्षक वह है जो चुनौतियो को स्वीकार कर उस पर विजय पाने का प्रयास करे। अतः शिक्षक को आरम्भ से ही जागरूक रहकर स्पष्ट शिक्षण रणनीति से कक्षा अध्यापन का कार्य करना चाहिए, ताकि सभी बच्चे भलिभाँति पढ़ना सीख सके। इसके लिए शिक्षक को यह करना होगा-

1. सुनने और बोलने के पर्याप्त अवसर दें।
2. वर्णमाला व बारह खड़ी से शब्द बनाये व बच्चों को भी शब्द बनाने को कहे।
3. पहले छोटे-छोटे बिना मात्रा के शब्द व बाद में मात्रा से बने शब्द पढ़ने को कहें।
4. क्रमशः तीन व चार वर्णो के शब्द बिना मात्रा के तथा मात्रा से बने शब्द पढ़ने को कहें।
5. आधे वर्ण व कठिन मात्रा से बने शब्द बाद मे पढ़ने को कहें।
6. छोटे-छोटे परिचित शब्द से बने वाक्य पढ़ने को कहें।
7. दो-तीन परिचित शब्दों से बने वाक्यो के बीच में अपरिचित शब्द का उपयोग कर पढ़ने को कहें।
8. पढ़ाये गए पाठ/गीत/कविताओं के बीच की पंक्ति छोड़कर उसे पूरा कर पढ़ने को कहें।

इससे लाभ -

1. बच्चे ज्यादा से ज्यादा शब्दों से परिचित होगें।
2. शब्दों को पढ़ना सीखेगें।
3. शब्दों के सम्बंध में समझ बढ़ेगी।
4. पढ़ने के अवसर मिलेगें।
5. बाहरी जगहो में लिखे शब्दों को पढ़ना सीखेगें।

शिक्षक का कार्य केवल पढ़ना, सिखाना ही नही हैं, अपितु यह देखना भी है कि बच्चे शब्दों को स्वतंत्र रूप से पढ़ना सीख गए है कि नही। प्रायः शिक्षक व्दारा कोई भी पठन सामाग्री कक्षा में समूह में पढ़ने को दी जाती है। इस स्थिति में ऐसे बच्चे जिनको पढ़ने मे कठिनाई होती है, उन बच्चों के पढ़ने की प्रतिक्षा करते है, जिनको पढ़ना आता है, और उनके व्दारा पढ़े गए शब्दों को दोहरा देते हैं। शिक्षक यह समझता है कि उसकी कक्षा के सभी बच्चों को पढ़ना आ गया है, किन्तु जब बच्चे को व्यक्तिगत रूप से कोई पाठ अथवा शब्द पढ़ने को दिया जाता है तो बच्चा पढ़ नही पाता। आज के समय में यह हमारे लिए सबसे बड़ी चुनौती है। इसका निराकरण के लिए शिक्षक को यह करना होगा-

1. कक्षा में पढ़ना सीखने की सभी विधाओं का उपयोग करें। जैसे-व्यक्तिगत व समूह वाक्य तथा आवाज के साथ पढ़ना व मौन वाचन।
2. बच्चों के व्यक्तिगत रूप से पढ़ते समय शब्दों के उच्चारण, विराम चिन्हों का उपयोग शब्दों व वाक्यों के उपयोग के सन्दर्भ इत्यादि पर ध्यान रखें।
3. बच्चों के गलत उच्चारण व अशुध्द रूप से पढ़ने पर तुरन्त सुधार करे।
4. पढ़ने में की गई त्रुटि से सम्बधित कारणों की पहचान कर इसे दूर करने हेतु ऐसे शब्दों व वाक्यों का बार-बार अभ्यास करावें।
5. शाला में पढ़ने हेतु बच्चों की रूचि के अनुसार अन्य पठन सामाग्री भी रखें।

इससे लाभ -

1. बच्चे शुध्दता व प्रभावशीलता के साथ पढ़ना सीखेगें।
2. बच्चों की पढ़ने में रूचि बढ़ेगी।
3. अन्य विषयों की उपलब्धि के स्तर में सुधार होगा।
4. आत्म विश्वास में वृध्दि होगी।

पढना सिखाने मे मौन वाचन का उपयोग

बच्चों के पढ़ना सीखने में उच्चारण के साथ-साथ मौन वाचन करने की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। पढ़ना सीखने/सिखाने की यह दोनो विधाएं प्राचीन काल से चली आ रही है, किन्तु उचित रणनीति के साथ नही हो पाने के कारण वर्तमान में इसका परिणाम अच्छा नही मिल पा रहा है। शिक्षक को पढ़ने के इन दोनो विधाओं का कक्षा में उपयोग उचित शिक्षण योजना के साथ करना चाहिए, तभी अपेक्षित परिणाम प्राप्त हो सकता है। इसके लिए शिक्षक को यह करना होगा-

1. कोई भी पाठ्य सामग्री शिक्षक स्वयं उच्चारण के साथ पढ़ते हुए उन शब्दों पर विशेष जोर दे जिन शब्दों को पढ़ने मे बच्चे गलती कर सकते है। उसके उपरान्त बच्चो से पढ़ने को कहें।
2. पाठ्य सामाग्री को उच्चारण के साथ पढ़ाने/पढ़ने के बाद बच्चों को मौन वाचन करने को कहे।
3. मौन वाचन के पश्चात उसी पाठ्य सामाग्री के बीच में आए कठिन शब्द/वाक्य को बच्चों को पढ़ने को कहे। यह कार्य सभी बच्चो से करवायें।
4. सभी बच्चों के पढ़ने के पश्चात अगले पाठ/पाठ्य सामग्री को बच्चों से दोनो तरीके से पढ़ने को कहे।
5. त्रुटि करने पर तुरन्त सुधार करें।

इससे लाभ -

1. उच्चारण के साथ पढ़ने पर उच्चारण सम्बंधी त्रुटियॉ सुधरेगी।
2. बच्चे सुनकर शब्दों को पहचानना व पढ़ना दोनों एक साथ सीखेगें।
3. मौन वाचन से शब्दों व वाक्यों की संरचना, उपयोग किए गए सन्दर्भ व अर्थो को समझने में आसानी होगी।
4. आवश्यकतानुसार कहॉ व कब उच्चारण के साथ तथा मौन वाचन करना है, की जानकारी होगी।
5. पढ़ने के दौरान शब्दों के उच्चारण में स्वरों के उतार-चढ़ाव को समझेगें।
6. मौन वाचन से कल्पना शक्ति का विकास होगा

पढ़ना सिखाने की गतिविधियां

गतिविधि क्रं. 01- वर्ण से शब्द बनाकर पढ़ना सिखाना

पूर्व ज्ञान - बच्चे वर्ण और मात्रा को पहचान कर पढ़ना जानते हैं।

गतिविधि के चरण-

1. कक्षा में सभी वर्णो से सम्बधित कार्ड रखे।
2. बच्चो को सुविधानुसार समूह में विभाजित करें।
3. प्रत्येक समूह को तीन वर्ण कार्ड, जिसमें एक मात्रा कार्ड सम्मिलित हो, वितरित करे।
4. बच्चों से कहे कि उनको प्राप्त वर्ण व मात्रा कार्ड की सहायता से शब्द बनाये।
5. फिर बच्चों व्दारा बनाये गए शब्दों को पढ़ने को कहे।
6. शुरूआत में छोटे-छोटे शब्द बनाने व पढ़ने का अभ्यास करावें तथा बाद में आधे वर्ण व कठिन मात्रा से बने कार्ड देकर शब्द बनवाये व पढ़ने को कहें।

गतिविधि से लाभ -

1. बच्चे वर्ण के साथ मात्रा का संयोजन करना सीखेगें।
2. अर्थपूर्ण व अर्थहीन शब्दों को समझेगें।
3. खेल-खेल में पढ़ना सीखेगें।

गतिविधि क्रं. 02- अन्य समूह के बच्चों से शब्द पढ़ने को कहना

पूर्व ज्ञान - बच्चे अपने समूह में शब्द बनाकर पढ़ना सीख गए हैं।

गतिविधि के चरण -

1. बच्चों को सुविधानुसार समूह में विभाजित करें।
2. प्रत्येक समूह को कुछ वर्ण व मात्रा कार्ड देवे।
3. समूह को दिए गए वर्ण व मात्रा कार्ड से शब्द बनाने को कहे।
4. शब्द बनाने के पश्चात कार्ड से बने शब्दों को अपने स्थान पर रखने को कहे।

5. बच्चों के समूह का स्थान बदलकर बच्चों को दूसरे समूह के बच्चो द्वारा बनाये गए शब्दों को पढ़ने को कहे।
6. सही अथवा गलत पढ़ने की पहचान शब्द बनाने वाले समूह के बच्चो से करवाये।
7. आवश्कतानुसार शिक्षक सहायता करें।

गतिविधि के लाभ-

1. बच्चो को पढना सीखने में मजा आएगा।
2. विभिन्न प्रकार के शब्दों को पढ़ना सीखेगें।
3. अपने स्तर पर ही शब्दो को सही करना व पढ़ना सीखेगें।
4. समूह में सहयोग करते हुए पढ़ना सीखेगें।

<u>गतिविधि क्रं. 03- वाक्य पढ़ना सिखाना</u>

पूर्व ज्ञान - बच्चे विभिन्न प्रकार के शब्द बनाना व पढ़ना जानते हैं।

गतिविधि के चरण -

1. कक्षा में वर्ण, शब्द व मात्रा कार्ड रखे।
2. बच्चों को समूह में विभाजित करे।
3. समूह को कुछ वर्ण, मात्रा व शब्द कार्ड वितरित करे।
4. बच्चों से उनके समूह को प्राप्त कार्ड का उपयोग कर एक पंक्ति का वाक्य बनाकर पढ़ने को कहें।
5. सरल वाक्यों के पढ़ लेने के बाद आधे वर्ण व कठिन मात्राओं से बने शब्दो से वाक्य बनाकर पढ़ने को कहे।
6. एक समूह द्वारा बनाए वाक्य को दूसरे समूह के बच्चो से पढ़ने को कहे।
7. आरम्भ में बच्चों को ही त्रुटि सुधारने का अवसर दे।
8. यह कार्य तब तक करे, जब तक बच्चों को पढ़ना न आ जाए।

गतिविधि से लाभ -

1. बच्चे शब्दों को क्रम से रखना सीखेगें।
2. शब्दों को अर्थ के अनुसार रखना सीखेगें।

3. शब्दों के सही संयोजन से शुद्ध रूप से पढ़ना जानेगें।
4. खेल-खेल में वाक्य पढ़ना सीख जाएगें।

<u>गतिविधि क्रं. 04- शब्द खोजो और पढ़ो</u>

पूर्व ज्ञान - बच्चे शब्दों के संयोजन से वाक्य बनाकर पढ़ना जानते हैं।

गतिविधि के चरण -

1. शिक्षक पूर्व मे पढ़ाए गए किसी पाठ का चयन करे।
2. पाठ को बच्चों की समूह संख्या के अनुसार अनुच्छेदो में निर्धारित कर ले।
3. प्रत्येक अनुच्छेद से सम्बधित कुछ कठिन शब्दों को अलग करे।
4. कठिन शब्दों को समूह में विभाजित कर कहें कि बच्चे उस शब्द को सम्बधित पाठ में खोज कर पढे।
5. यही गतिविधि बच्चों को बिना पढ़े पाठ से शब्द खोजकर पढ़ने में भी करें।
6. यह गतिविधि बार-बार कराए।

इससे लाभ -

1. बच्चे शब्दों के समूह में से दिए गए शब्द को खोजकर पढ़ना सीखेगें।
2. शब्दों को खोजने के दौरान अन्य शब्दों को भी पढ़ने के अवसर पाएगें।
3. बच्चों की जिज्ञासा बढ़ेगी।
4. बच्चे यह गतिविधि अपने स्तर पर करके भी पढ़ना सीखने का प्रयास करेगें।

गतिविधि क्रं. 05- प्रिन्टरीच एन्वायरमेन्ट से पढ़ना सीखना।

पूर्व ज्ञान - बच्चे शब्द खोजकर वाक्य बनाना व पढ़ना जानते हैं।

गतिविधि के चरण -

1. अपने शाला में प्रिन्टरीच एन्वायरमेन्ट बनाए।
2. बच्चों को संख्या के अनुसार समूहों मे विभाजित करें।

3. प्रत्येक समूह को एक निश्चित वर्ण देते हुए उससे बने शब्द प्रिन्टरीच एन्वायरमेन्ट से खोजकर पढ़ने को कहे।
4. प्रत्येक समूह द्वारा खोजे गए शब्द को शिक्षक श्यामपट्ट पर लिखें।
5. श्यामपट्ट पर लिखे सभी शब्दों को प्रत्येक समूह को पढ़ने को कहें।
6. पढ़ने के बाद उन शब्दों से वाक्य बनाकर पढ़ने को कहें।
7. यह गतिविधि तब तक कराए, जब तक सभी बच्चे पढ़ न ले।

गतिविधि से लाभ -

1. बच्चे शब्दों के समूह में से सही शब्द खोजकर पढ़ना सीखेगें।
2. अन्य शब्दों व उससे बने वाक्यों को पढ़ना सीखेगें।
3. बच्चे पढ़ना सीखने के लिए प्रेरित होगें।

क्रम से भाषाई कौशल सिखाने की रणनीति

अभी तक हमने भाषा शिक्षण के तीन कौशलों पर चर्चा की है, और यह जानने का प्रयास किया है कि बच्चों में इन कौशलों के समुचित विकास के लिए हमे किन-किन बातों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। हमने पिछले अध्यायों में इन कौशलों के विकास पर जो चर्चा की है, वह एक प्रकार से सामान्य चर्चा है, अर्थात इससे यह स्पष्ट नही होता है कि प्राथमिक शाला की 5 कक्षाओ में हम एक ही रणनीति से शिक्षण करे या अलग-अलग कक्षाओं के लिए अलग-अलग रणनीति बनाएं। वैसे हम यह भी जानते है कि भाषायी कौशलों का विकास अलग-अलग न होकर सामुहिक रूप से होता है, अर्थात हम में से अधिकांश लोग सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना (औपचारिक शिक्षा आरम्भ होने पर) लगभग साथ-साथ सीखते हैं। सुविधा व स्पष्ट रणनीति के लिए इसे मैं कक्षानुसार तालिका के माध्यम से स्पष्ट करना चाहूंगा।

कक्षा-1	कक्षा-2	कक्षा-3	कक्षा-4	कक्षा-5
वर्णमाला	दो वर्णो से बने शब्द	तीन वर्णो से मात्रा व बिना मात्रा के शब्द, छोटे-छोटे वाक्य	कठिन मात्राओं से बने छोटे और बड़े वाक्य	सभी प्रकार के वाक्य

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि बच्चे कक्षा-1 से 5 के बीच में भाषायी कौशलों को क्रमोत्तर रूप से प्राप्त करते हैं और कक्षा 5 वी के आते-आते बच्चे सुनने, बोलने, पढ़ने व लिखने से सम्बधित कौशलों में अपनी उम्र के सापेक्ष दक्ष हो जाते हैं। इसका प्रमाण हमे बच्चे व्दारा अपने परिवेश के सम्बंध में की गई प्रतिक्रिया में दिखाई देता है।

इसे जानना क्यों आवश्यक हैं ?

1. बच्चों की उम्र व कक्षा के अनुसार उन्हे शब्दों को सुनने का अवसर उपलब्ध करा सकें।
2. बच्चों व्दारा अपने परिवेश के प्रति व्यक्त की गई प्रतिक्रिया को समझ सकें।
3. अनावश्यक कार्य-योजना बनाने व बच्चों पर बोझ डालने से बच सकें।

हम यह जानते है कि बच्चे जन्म के पूर्व (मॉ के गर्भ में) ही घ्वनि से परिचित होते है किन्तु बोलना एक सामान्य बालक लगभग 6 माह की उम्र से आरंभ करता है। इस उम्र का बालक बोलने के लिए केवल स्वर घ्वनि का उपयोग करता है जैसे- खुश होने पर आ..... रोने पर उ.... व गुस्सा होने पर चिल्लाने की घ्वनि इत्यादि। बच्चा स्पष्ट रुप से वर्ण का उच्चारण 9 से 12 माह की उम्र में करता है -

जैसे मॉ, पा, बा, दा, इत्यादि। एक वर्ष के बाद ही बच्चा दो वर्णो को संयुक्त कर बोलना सीखता है जैसे - पापा, बाबा, दादा, मामा इत्यादि। बच्चे में बोलने के भाषायी कौशल का विकास क्रमिक रुप से होता रहता है और कक्षा 1 में प्रवेश लेने तक वह अपने आस-पास के प्रचलित व परिचित छोटे छोटे शब्दों व वाक्यों को बोलता है। कक्षा 1 में प्रवेश के बाद यह शिक्षक की जिम्मेदारी होती है कि वे प्रत्येक बच्चे को उनकी उम्र व कक्षा के अनुसार सही ढंग से सुनने व बोलने का अवसर दें। जैसे जैसे कक्षा बढ़ती जाए वैसे वैसे सुनने, बोलने और पढ़ने के पर्याप्त अवसर देते रहें।

इसे जानना क्यों आवश्यक है:-

1. बच्चों की क्षमता को सही ढंग से जान सकें।
2. सही शिक्षण रणनीति के साथ कार्य कर सके।
3. उम्र व कक्षा के अनुरुप पाठ्यवस्तु व उदाहरण प्रस्तुत कर सके।
4. बच्चों को सहज व सरल कार्य दे सके।

भाषा शिक्षण:- मेरा अनुभव (पार्ट-42)

सुनना, बोलना और पढ़ना इन तीनों भाषायी कौशलों के आपस में क्या सम्बंध हैं इसे चित्र के माध्यम से सही ढ़ंग से समझा जा सकता है -

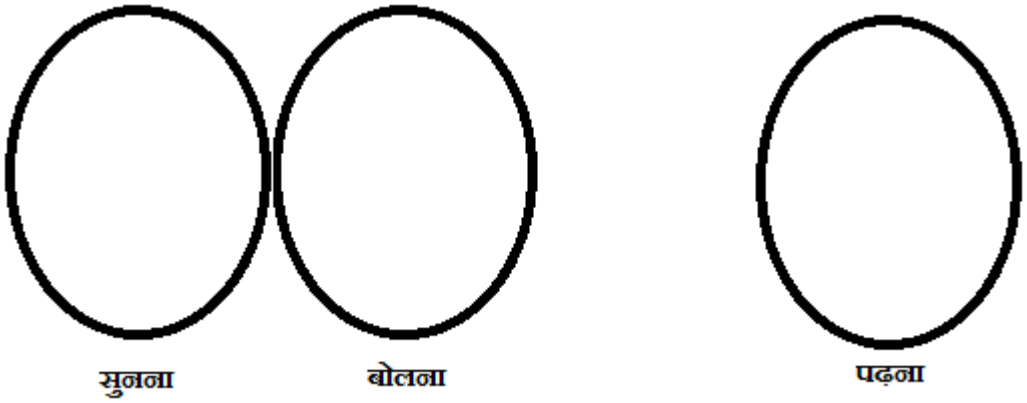

यह चित्र प्रदर्शित करता है कि बच्चे आरम्भ में जिस मात्रा में सुनने का अवसर प्राप्त करते हैं उसी अनुपात में बोलते भी है, जबकि पढ़ने से काफी दूर होते हैं -

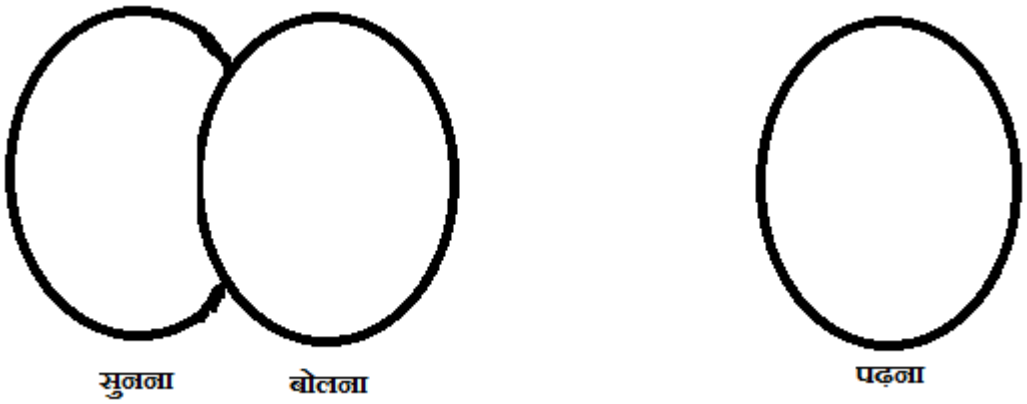

इस चित्र से स्पष्ट होता है कि जैसे-जैसे बच्चों की उम्र बढ़ती जाती है वैसे-वैसे उनकी सुनने और बोलने की क्षमता भी बढ़ती जाती है, किन्तु औपचारिक शिक्षा आरम्भ होने तक वे पढ़ने की दक्षता/क्षमता से दूर होते हैं -

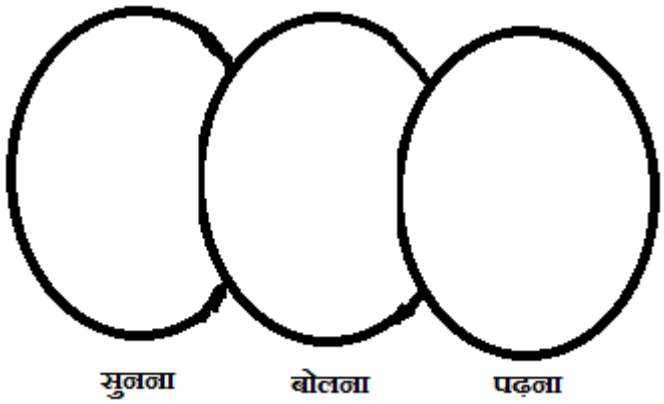

यह चित्र स्पष्ट करता है कि बच्चों मे औपचारिक शिक्षा आरम्भ होने के साथ सुनने व बोलने के साथ-साथ पढ़ने की भाषायी दक्षता भी विकसित होती जाती है -

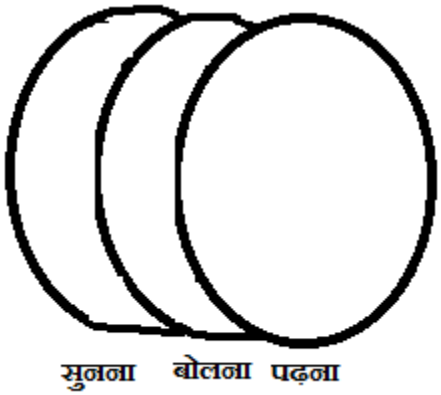

यह चित्र कक्षा 5 वी में अध्ययनरत बच्चों की स्थिति को स्पष्ट करता हैं। कक्षा 5 वी के आते-आते बच्चों मे सुनने और बोलने के भाषायी क्षमता का विकास उम्र के अनुपात में लगभग पूर्ण हो जाता है, जबकि पढ़ने में कुछ अधिक कठिन शब्दों व वाक्यों को छोड़कर पढ़ने की क्षमता का विकास होता है। यह न केवल सैध्दांन्तिक अपितु व्यवहारिक रूप में भी सम्भव है, बशर्ते सही योजना से कार्य करे।

टीप - सुनना, बोलना, पढ़ना ऐसे भाषायी कौशल है जिनका विकास मनुष्य में जीवन पर्यन्त होते रहता है, अर्थात जन्म से लेकर मृत्यु तक हम सुनना, बोलना और पढ़ना सीखते है।

इसे जानना क्यो आवश्यक है -

1. भाषायी कौशलों के विकास को सूक्ष्मता से समझ सके।
2. इनके विकास को व्यवहारिक रूप दे सके।
3. कक्षा के अनुरूप अलग-अलग कार्य-योजना सरलता बना सके।

लिखना

अब हम चतुर्थ भाषाई कौशल लिखना पर विस्तार से चर्चा करेंगे । आप सभी का यह अनुभव होगा कि कोई व्यक्ति यदि 100 शब्द सुनता है तो उसमें से 50 शब्द ही बोलता है, और इससे भी कम पढ़ता है तथा लिखने के मामले में वह और भी कम होता है । सका प्रमाण हमें बच्चों में भी मिल जाता है । प्राथमिक शाला के ज्यादातर बच्चे वर्ण, शब्द व वाक्यों को देखकर लिख लेते है, किन्तु जब आप कक्षानुरूप बच्चों को वर्ण, शब्द व वाक्य बोलकर लिखने को दें तो बच्चे नही लिख पाते । इसका सबसे प्रमुख कारण आरंभिक तीन कौशलों पर पर्याप्त व समुचित अभ्यास का अभाव ही है । अतः लिखना सिखाने के पूर्व कुछ बातों पर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित करना होगा -

1. कक्षानुरूप सुनना, बोलना और पढ़ना से संबंधित गतिविधियों का पर्याप्त अभ्यास करावें ।
2. बच्चें जिन वर्णो, शब्दों व वाक्यों को देखकर लिखते है, उन्ही वर्णो, शब्दों व वाक्यों को बिना देखे अर्थात् शिक्षक के बोलने पर लिखने को कहें।
3. लिखने के समय बच्चों के हाथ में कलम व बैठने की स्थिति सुनिश्चित करें।
4. आधे वर्ण व कठिन मात्राओं से संबंधित शब्द का अभ्यास अलग से करावें। इन वर्णो व इन से बने
1. शब्दों को लिखना सीखने के बाद ही मिश्रित शब्द लिखने को कहें ।
5. विषय के लिए आबंटित समय सारणी में से 33 प्रतिशत भाग लिखना सीखने के लिए रखें ।
6. केवल देखकर लिखना आने को लिखना सीख गया, मानकर न चलें ।

इससे लाभ:-

1. बच्चे क्रमिक रूप से लिखना सीखेगें ।
2. प्रत्येक बच्चे की समस्याओं की पहचान कर सकें ।
3. आगे शब्दों में मात्रा लगाने व शब्द लिखने में त्रुटि नही होगी ।
4. सीधी पंक्ति में लिखना सीखेगें ।
5. वर्ण व शब्दों बीच समान दूरी रखने का अभ्यास होगा ।

लिखना सिखाने की गतिधिवियां

बोलने और लिखने में दक्ष होने के लिए कर्ता व्दारा संदर्भ व परिस्थिति के अनुसार अपने भावों को अभिव्यक्त करने के लिए प्रयुक्त प्रतीकों का महत्वपूर्ण स्थान है । यह प्रतीक मूर्त और अमूर्त दोनों रूपों में हो सकता है। इसी कारण बोलने और लिखने को सक्रिय दक्षता कहा जाता है । इन तथ्यों को भलि-भांति समझने के बाद यह स्पष्ट होता है कि बच्चों को लिखना सिखाने के लिए शिक्षक को आरंभ से ही स्पष्ट कार्य योजना के साथ कक्षा में प्रवेश करना होगा। सभी बच्चे लिखने में दक्ष हो, इसके लिए कुछ गतिविधियॉ की जा सकती है -

गतिविधि क्र. 1 - वर्ण लिखना सिखाने के लिए गतिविधि

पूर्व ज्ञान - बच्चे वर्णो को सुनकर बोलना व पढ़ना सीख गये हैं ।

गतिविधि के चरण -

1. सभी वर्ण माला को श्याम पट पर लिखें ।
2. वर्ण को लिखावट के क्रम में व्यवस्थित करें ।
3. लिखने में उंगली व हॉथ के कलाईयों के घूमने/घूमाने की महत्व पूर्ण भूमिका होती हैं। अतः एक क्रम
4. से घूमने पर बनने वाले वर्ण को साथ-साथ लिखना सिखाना चाहिए ।
5. जैसे-
    1. अ, आ, उ, ऊ, ओ, औ, अं, अः
    2. प, फ, ण, ष
    3. इ, ई, झ, ज्ञ, ड, ड़
    4. ट, ठ, ढ, द
    5. र, स, य, थ, ख
    6. न, म, भ, श
    7. त, त्र, श्र इत्यादि
6. वर्ण माला को बनावट के आधार पर लिखना सीखने के पर्याप्त अभ्यास के बाद वर्णो को वर्ण माला चार्ट के क्रम में लिखना सीखावें ।
7. देख कर लिखने के अभ्यास के बाद बोलकर अर्थात् बिना देखे लिखने को कहें।

इससे लाभ -

1. बच्चे सरलता से वर्ण लिखना सीखेगें।

2. वर्ण को बनावट के आधार पर समझेगें।
3. भिन्न-भिन्न तरीकों से लिखने पर वर्णो की पहचान सुढ़ढ़ होगी।
4. लिखने में त्रुटि नही होगी।

<u>गतिविधि क्र. 2 - श्रुतिलेख व्दारा लिखना सिखाना</u>

पूर्व ज्ञान - बच्चे कक्षानुरूप वर्ण, शब्द व वाक्य लिखना सीख गये हैं ।

गतिविधि के चरण:-

1. शिक्षक बच्चों व्दारा पढ़े हुए पाठ के किसी अनुच्छेद का चयन करें ।
2. बच्चों से कहें कि उनके बोलने के बाद कॉपी पर लिखें ।
3. शिक्षक शब्द में प्रयुक्त मात्रा व विराम चिन्हों को ध्यान में रखते हुए शब्दों का उच्चारण करें, व बच्चों से कहें कि वे ध्यान से सुनकर लिखें।
5. अनुच्छेद के पूर्ण होने के बाद बच्चों को कॉपी आपस में बदल कर पाठ्य पुस्तक देखकर जॉचने को कहें। की गयी त्रुटियों पर गोल का निशान लगावें ।
6. बच्चों व्दारा की गयी त्रुटियों को पहचानकर वैसी ही मात्रा व शब्दों की अलग से अभ्यास करावें ।
7. पर्याप्त अभ्यास के बाद कक्षा के पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त, उपलब्ध अन्य पुस्तकों से भी श्रुतिलेख लिखने का अभ्यास करावें ।
8. श्रुतिलेख प्रतिदिन कम से कम 10 मिनट अनिवार्य रूप से करावें।

इससे लाभ:-

1. बच्चों की एकाग्रता बढ़ेगी।
2. सुनकर लिखने की क्षमता का विकास होगा।
3. लिखने की दक्षता क्रमशः विकसीत होती जायेगी।
4. बच्चों को अपने व्दारा की गयी त्रुटियों की जानकारी होगी, और वे इसी सुधारने की कोशिश करेगें।
5. हस्तलेखन में स्वच्छता व शुध्दता आयेगी ।

<u>गतिविधि क्र. 3 - स्वयं के संबंध में लिखकर लिखना सीखाना</u>

पूर्व ज्ञान:- बच्चे कक्षा में श्रुतिलेख के माध्यम से बिना देखे सरल शब्द व वाक्यों को लिखना जानते हैं ।

गतिविधि के चरण:-

1. शिक्षक छात्रों को कक्षानुरूप कुछ निर्धारित बिन्दु पर स्वयं के बारे में लिखने को कहें। जैसे- कक्षा 3 के छात्रों को अपना व अपने माता पिता व गांव का नाम, कक्षा 4 के बच्चों को अपने घर के सदस्यों की रूचि व शाला में प्रिय मित्र, व कक्षा 5 के बच्चों को स्वयं की पसंद, घर के सदस्यों के साथ संबंध, गांव का कोई प्रसिध्द व्यक्ति या स्थान इत्यादि पर कुछ पक्तियों में लिखने को दें ।
2. बच्चों व्दारा सही लिख लेने पर लिखने के विषय बदलते रहें ।
3. बिना बिन्दु निर्धारित किये बच्चों से, जो उनके मन में हो, लिखने को कहें ।
4. बच्चों व्दारा लिखे नोट्स/कॉपी की जांच समय-समय पर करते हुए, की गयी त्रुटियों के संबंध में बच्चों को अवगत कराते रहें ।
5. अपने संबंध में लिखना सीख लेने के अभ्यास के बाद, बच्चों से कहें कि वे अपने प्रिय व्यक्ति के संबंध में भी कुछ लिखें ।

इससे लाभ:-

1. बच्चे संदर्भ व परिस्थिति के अनुसार शब्दों को चयन कर लिखना सीखगें ।
2. अभिव्यक्ति के अवसर प्राप्त होगें ।
3. लिखने में की जाने वाली त्रुटियॉ सुधरेगी ।
4. बच्चों में लिखने की अलग-अलग शैली विकसित होगी ।
5. लिखने में स्वच्छता व स्पष्टता आयेगी ।

<u>गतिविधि क्र. 4 - व्यक्ति/पशु/वस्तु के संबंध में लिखने को देना</u>

पूर्व ज्ञान:- बच्चे सरल शब्दों व वाक्यों से छोटे अनुच्छेद क्रम से लिखना जानते हैं।

गतिविधि के चरण:-

1. शिक्षक कक्षा को सुविधानुसार समुह में विभाजित कर लें।
2. प्रत्येक समुह को अलग-अलग बिन्दु पर लिखने को कहें। जैसे - घोड़ा, शेर, बाजार इत्यादि
3. दिये गये बिन्दु पर बच्चों के लिखने से पूर्व पहले उदाहरण देकर शिक्षक स्वयं समझावें।
4. कक्षा के स्तर के अनुसार पक्ति निर्धारित करें। जैसे - कक्षा 3 के बच्चों को 3-4, कक्षा 4 के बच्चों को 7-8 व कक्षा 5 के बच्चों को 10-12 पक्ति लिखने को कहें ।

5. लिखने के लिए ऐसे विषय वस्तु निर्धारित करें, जिससे बच्चे पर्याप्त रूप से परिचित हो। अपरिचित विषय पर लिखने को न कहें।
1. 6. बच्चों के लिख लेने के पश्चात् जॉच अवश्य करें । अच्छा लिखने वाले बच्चों को प्रोत्साहित करें।

इससे लाभ:-

1. बच्चें उनको प्राप्त विषय वस्तु पर गहराई से सोचना सीखेगें।
2. अपने भावों को क्रमबध्द रूप से अभिव्यक्ति करना जानेगें।
3. विषय वस्तु का विश्लेषण करना सीखेगें।
4. निबंध लेखन की क्षमता विकसित होगी।

<u>गतिविधि क्र. 5 - चित्र पर कहानी लिखवाना</u>

पूर्व ज्ञान:- बच्चे अपने परिचित विषय/वस्तु पर गहराई से सोचना व विश्लेषण करना जानते है ।

गतिविधि के चरण:-

1. बच्चों के सामने चित्र रखते हुए ध्यान से देखने को कहें ।
2. चित्र दिखाने के पश्चात् बच्चों से पूछें कि वे चित्र देखकर क्या समझ रहें हैं ।
3. बच्चों व्दारा चित्र को सही न समझने की स्थिति में स्वयं समझायें ।
4. बच्चों से कहें कि उन्होनें चित्र के संबंध में जो सुना है, उसके आधार पर अपने शब्दों में कहानी लिखें ।
5. बच्चों के कहानी लिखते समय अवलोकन करते रहें ।
6. कहानी लिखने के बाद बच्चों को कहानी सुनाने को कहें ।
7. जिस बच्चे की कहानी सबसे अच्छा हो, उसकी प्रसंशा करें ।
8. व्यक्तिगत व समूह दोनों प्रकार से कहानी लिखने का कार्य करावें ।

इससे लाभ:-

1. बच्चे अन्य विषयों पर भी कहानी लिखने का प्रयास करेगें ।
2. कहानी में पात्रों की भूमिका से परिचित होगें ।
3. तर्क व कल्पना शक्ति का विकास होगा ।

4. कहानी के निष्कर्षो से व्यवहारिक सीख मिलेगी ।
5. भाषा पर पकड़ मजबूत होगी ।

<u>गतिविधि क्र. 6 - डायरी लेखन की आदत का विकास</u>

पूर्व ज्ञान:- बच्चे अपने भावों को कुछ पक्तियों में लिखना जानते हैं ।

गतिविधि के चरण:-

1. प्रत्येक बच्चे को एक कॉपी अथवा छोटी नोट पुस्तिका रखने को कहें ।
2. बच्चों से चर्चा करें कि वे प्रातः से लेकर सोने तक क्या - क्या काम करते है ।
3. बच्चों के वदारा बतलाये जाने के बाद, उन्हे इसी को अपनी कॉपी/नोट पुस्तिका में लिखने को कहें ।
4. शिक्षक यह भी बतलायें कि जब हम अपने से जुडी हर छोटी-बड़ी बात को सच्चाई के साथ नोट पुस्तिका में लिखते है, तो वह ''डायरी लेखन'' कहलाता है ।
5. कुछ दिनों तक इसे प्रतिदिन बच्चों से शाला में लिखने को कहें ।
6. बच्चों में इस आदत के विकास के बाद इसे प्रतिदिन सोने के पहले लिखने को कहें ।
7. डायरी की जॉच प्रतिदिन अवश्य करें ।
8. सुधार हेतु आवश्क दिशा निर्देश देते रहें ।

इससे लाभ:-

1. 1. लेखन कौशल के विकास में डायरी लेखन का महत्वपूर्ण स्थान हैं । इससे बच्चे आगे चलकर
2. छोटी-छोटी कहानियॉ, आत्मकथा व संस्मरण लिखना सीखेगें ।
3. स्मरण शक्ति बढ़ेगी ।
4. महत्वपूर्ण तथ्य व यादें संग्रहित होगी ।
5. व्यवहारिकता का विकास होगा ।
6. छिपाने की प्रवृत्ति का ह्रास होगा ।

उपसंहार

बच्चों के व्दारा सामान्य क्रम व गति से (जिस कक्षा के लिए जो और जितना निर्धारित है) सुनना, बोलना,पढ़ना व लिखना सीखने के बावजूद कुछ मात्राओं से बने ऐसे शब्द है, जिन्हे बोलने, पढ़ने और लिखने में बच्चे गलती करते है। बच्चों के व्दारा यह गलती/त्रुटि गलत उच्चारण के साथ सुनने, बोलने व पढ़ने के कारण होती है, जिसका परिणाम हमें उनके व्दारा लिखे गये शब्दों में भी दिखाई देता हैं। आप अपने आसपास के बच्चों को क्रिया के स्थान पर कृया , कृष्ण के स्थान पर क्रिष्ण तथा आशीर्वाद के बदले आर्शीवाद बोलते, पढ़ते व लिखते पाये होगें । इनके व्दारा की गयी इन त्रुटियों पर यदि आरंभ से ध्यान न दिया जायें तो आगे चलकर भी इन त्रुटियों की पुनरावृत्ति होती रहेगी , जो भाषाई कौशलों के विकास को अवरूध्द करेगी। पिछले अध्यायों में हमने भाषा शिक्षण के समय ध्यान रखे जाने वाले सभी आवश्यक मूलभूत बिन्दुओं पर विस्तार से चर्चा करते हुए, बच्चों में भाषाई दक्षता के पूर्ण विकास हेतु आवश्यक गतिविधियों पर भी चर्चा की हैं। यदि शिक्षक अपने कक्षा अध्यापन में इन बातों पर गंभीरता से विचार करते हुए शिक्षण हेतु आवश्यक रणनीति बनाकर कार्य करेगा तो बच्चों में चारों भाषाई कौशलों का विकास निश्चित रूप से होगा । शिक्षक को अपने कक्षा अध्यापन में यह भी ध्यान रखना होगा कि बच्चा अपने आसपास के परिवेश में जो भी सुनता व बोलता है उन सभी शब्दों को अपनी उम्र के अनुसार पढ़ना व लिखना भी सीख जाये।

आज शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अन्तर्गत सामाजिक अंकेक्षण के समय प्रायः सभी शालाओं में समान्य रूप से यह पाया जाता है कि बच्चों में कक्षा व उम्र अनुरूप भाषाई कौशलों का विकास नही हुआ हैं। यह स्थिति हम सभी शिक्षकों के लिए अत्यंत चिंतनीय व सोचनीय हैं । भाषाई दक्षता बच्चों की अन्य विषय उपलब्धि पर भी प्रभाव डालता है । यदि हम चाहते है कि हमारे शाला में अध्ययनरत सभी बच्चें सभी विषयों में पूर्ण रूप से दक्ष हो अर्थात् सभी बच्चों में कक्षा व आयु अनुरूप दक्षता दिखाई दे तो हमें भाषाई कौशलों के विकास पर विशेष ध्यान देना होगा । तभी हम अपने सभी बच्चों को एक सुनहरा व उज्जवल भविष्य दे सकते हैं।